RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 6 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका फरवरी 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद

सभी पक्षों में संवाद और नाथद्वारा का विकास ही मेरी प्राथमिकता : डॉ. सीपी जोशी

कुरज गांव कनकावली, यह सेजा की धरती, पीर पीड़ा सब हरती

मानवता का सच्चा सिपाही डॉ. विजय खिलनानी

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

गणतंत्र दिवस की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

अनील चौधरी
सरपंच-कुरज

कमलेश राजोरा
उपसरपंच-कुरज

रमेश सुथार
ग्राम विकास अधिकारी

समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी

स्वच्छता अभियान हेतु सार्वजनिक अपील :-

▶▶ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ▶▶ कागज, प्लास्टिक की बोतेलें, धातु के डिब्बे, कांच आदि अलग-अलग फेंके। ▶▶ सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंके। ▶▶ सार्वजनिक स्थलों पर थूकें नहीं। ▶▶ अपने पालतू जानवरों को सार्वजनिक स्थल पर गन्दगी न फैलाने दें। ▶▶ इमारत की सीढियां, लिफ्ट, बरामदा आदि में गंदगी न फैलाएं। ▶▶ नालियों व सीवरेज को ब्लॉक न करें, न ही प्रशासन की अनुमति के बिना इनमें फेर बदल करें। ▶▶ निर्माण स्थलों पर या आसपास कचरा जमा होने की स्थिति में तुरंत प्रशासन को सूचित करें।

ग्राम पंचायत कुरज
पंचायत समिति रेलमगरा, जिला-राजसमंद

सम्पादकीय

बजट का सार

केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली की अनुपस्थिति में वित्त मंत्रालय का प्रभार संभाल रहे पीयूष गोयल ने 1 फरवरी को सुबह 11 बजे संसद में बजट पेश किया। आजादी के बाद से देश में अब तक 14 बार अंतरिम बजट पेश हुए हैं। इस बार बजट में आपके हित की क्या खास बाते हैं। इसका सार इस प्रकार है–

➡ 40 हजार रुपए के ब्याज पर कोई टीडीएस नहीं काटा जाएगा।

➡ स्टैंडर्ड डिडक्शन 40 हजार से बढ़ाकर 50 हजार रुपए किया।

➡ टैक्स सीमा ढाई लाख से बढ़ाकर 5 लाख रुपए की।

➡ मिडिल क्लास पर टैक्स का बोझ कम करना प्राथमिकता।

➡ 24 घंटे आईटी रिटर्न की प्रोसेसिंग।

➡ टैक्स मूल्यांकन के लिए दफ्तर नहीं जाना पड़ेगा।

➡ अगले 5 सालों में 1 लाख डिजिटल गांव बनाने का लक्ष्य।

➡ कम तनख्वाह वालों को गारंटिड पेंशन स्कीम का ऐलान।

➡ कर्मचारी की मृत्यु पर ईपीएफ 2 लाख से बढ़कर 6 लाख।

➡ कौशल विकास योजना से 1 करोड़ युवाओ का फायदा।

➡ महिलाओं की मैटेरनिटी लीव 26 हफ्ते तक बढ़ाई गई।

➡ गर्भवती महिलाओं के लिए पीएम मातृ योजना।

➡ 60 वर्ष की आयु के बाद 3 हजार रुपए प्रतिमाह तक की पेंशन।

➡ तेज विकास के चलते ईपीएफओ की सदस्यता में पिछले दो वर्षों के दौरान 2 करोड़ की बढ़ोतरी हुई है। सरकार ने ग्रेच्युटी लिमिट को 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख रुपए करने का फैसला किया है।

➡ 21 हजार रुपए तक के वेतन वालों को मिलेगा बोनस

➡ कॉलेजों में 25 फीसदी सीटें बढ़ेगी।

➡ सरकार ने गरीबों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की।

➡ श्रमिकों का बोनस बढ़ाकर 7 हजार रुपए किया।

➡ श्रमिकों की मौत पर मुआवजा बढ़कर 6 लाख रुपए किया।

➡ मुद्रा योजना के तहत 75 प्रतिशत बेनिफिशियरी महिलाएं हैं। मातृत्व अवकाश अब 26 महीने का है।

➡ उज्वला योजना के तहत 8 करोड़ एलपीजी कनेक्शन का लक्ष्य व 6 करोड़ कनेक्शन पहले ही दिए जा चुके हैं।

➡ पशुपालन और मत्स्य के किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड के जरिए लोन लेने वाले किसानों को कर्ज में दो फीसदी ब्याज की छूट।

➡ प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, किस्तों में मिलेगा पैसा। हर किसान के खाते में सीधे 6 हजार रुपए जाएंगे। 1 दिसंबर 2018 से लागू होगी योजनाएं 12 करोड़ किसानों को होगा फायदा। 2 हेक्टयर क्षेत्र वाले किसानों को मिलेगा फायदा। 22 फसलों का समर्थन मूल्य बढ़ाया।

चूंकि लोकसभा चुनाव का वर्ष है। इसलिए मतदाता को लुभाने का पूरा प्रयास इस बजट में किया गया है। यह बजट बादलों की गड़गड़ाहट की तरह बड़ा ही दमदार दिखाई दे रहा है, लेकिन इसकी ठंडी बूंदे जमीन तक कितनी पहुंचती है, यह सोचने का विषय है। हालांकि कहा गया है कि यह अन्तरिम बजट है, जो लोकसभा चुनाव होने के बाद लागू होगा। देखना यह होगा कि भाजपा की मोदी सरकार वापस सत्ता में आकर इस बजट को लागू कर पाएगी या अन्य दलों की सरकार बनने पर ये घोषणाओं कागजों तक ही सिमटकर रह जाएगी। फिलहाल मोदी सरकार ने जनता के चेहरे पर मुस्कान देने का प्रयास किया है।

सम्पादक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय
जयवर्द्धन
website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी	सूर्यप्रकाश दीक्षित, हेमेन्द्रसिंह
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** नाथद्वारा का विकास ही प्राथमिकता : डॉ. सीपी जोशी — पेज 4
2. **गुमनाम शख्सियत :** मानवता का सच्चा सिपाही डॉ. खिलनानी — पेज – 6
3. **तीखी मिर्ची :** चुनावी वादों की सच्चाई — पेज – 8
4. **मनन :** गर्भ में पलती बेटी से क्यों नहीं प्रेम — पेज – 9
5. **हादसों के हालात :** मौत के सौदागर गड्ढे — पेज – 10
6. **देशभक्ति : :** देस भगति री मेवाड़ी विभूतियां — पेज – 13
7. **मंथन :** जिन्दगी पर भारी सपनों का बोझ — पेज – 14
8. **माटी का लाल :** किशनलाल सनाढ्य — पेज – 15
9. **ग्राम यात्रा :** कुरज — पेज – 18
10. **व्यंग्य :** स से साम्प्रदायिकता — पेज – 21
11. **पाठक प्रतिक्रिया :** जयवर्द्धन से भावनात्मक जुड़ाव — पेज – 22
12. **व्यंग्य :** आइये महान ज्योतिषी बने — पेज –23
13. **मेरा गांव, मेरे लोग :** गोकुलानन्द व पीडी शास्त्री — पेज –31
14. **मेवाड़ी चौपाल :** गदेड़ा गुलाब जांबू चेप रिया — पेज –34

सभी पक्षों में संवाद और नाथद्वारा का विकास ही मेरी प्राथमिकता : डॉ. जोशी

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष एवं नाथद्वारा विधायक डॉ. सीपी जोशी के साथ जयवर्द्धन के सहयोगी वरिष्ठ पत्रकार अरविंद मुखिया का साक्षात्कार। नाथद्वारा के विकास से लेकर विधानसभा सत्र के संचालन तक सवालों पर वे खुलकर बोले। इसी पर एक खास रिपोर्ट...।

नवनिर्वाचित राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष एवं नाथद्वारा विधायक डॉ. सीपी जोशी से प्रदेश को उम्मीद और अपेक्षाओं को लेकर लिए गए विशेष साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि राजस्थान विधानसभा संसदीय परंपराओं के निर्वहन के साथ प्रदेश की अपेक्षाओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बने, संवाद सभी पक्षों में हो, ताकि हम सार्थक चर्चा कर सकें। संसदीय परंपरा की यही आवश्यकता भी है।

डॉ. जोशी ने कहा कि एक आदर्श, अनुशासित और परिणाम दायक विधानसभा के लिए आवश्यक है कि सभी मिलकर प्रदेश के विकास एवं प्रगति को केंद्र में रखकर कार्य करें। पक्ष और प्रतिपक्ष विधानसभा में जिम्मेदारी से अपने दायित्व एवं कर्तव्य की भूमिका का निर्वहन करें, जिससे प्रदेश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सके और जनता की समस्याओं का उनकी आकांक्षाओं का समय पर निदान हो सकें।

इसके लिए यह भी आवश्यक है कि सभी विधायकगण विधानसभा के नियमों और वैधानिक प्रक्रिया का पालन करें, जिससे ज्यादा से ज्यादा विधानसभा के अंदर चर्चा हो सके और आवश्यक जनहित पर नियम, कानून और प्रावधान बनाए जा सकें। डॉ. जोशी ने कहा कि विधानसभा ही एक ऐसा माध्यम है, जिससे हम जनता की समस्याओं का मार्ग सरकार के सामने प्रस्तुत करते हैं।

विधानसभा अध्यक्ष ने प्रतिपक्ष की जवाबदेही एवं जिम्मेदारी के प्रश्न पर कहा कि प्रतिपक्ष जनता की समस्याओं को प्रभावशाली और नीतिगत तरीके से सरकार के सामने प्रस्तुत करें। सरकार में यदि कोई कमी है या उसकी नीतियों पर कोई प्रश्न है, तो सटीकता से अपनी बात सदन के सामने रखें। बहस के विषय ऐसे होने चाहिए जो चुनौतियों का समाधान करें। विधायकों द्वारा सदन में उठाए जाने वाले मुद्दे, वाद- विवाद या बहस के विषय ऐसे होने चाहिए जो राजस्थान के सभी क्षेत्रों में सामने आ रही चुनौतियों का समाधान करें।

डॉ. जोशी ने कहा कि पक्ष तथा प्रतिपक्ष के सभी सदस्य विधानसभा संचालन के नियम ध्यान से पढ़ें, जिससे विधानसभा सत्र के समय का बेहतर उपयोग करते हुए जनता की बात को प्रभावी तरीके से रख सकें। सभी विधायकों से विधानसभा की गरिमा बनाए रखने का आह्वान किया। डॉ. जोशी ने पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों को आश्वस्त कयाि कस भीक ेअ पनीब ातक हनेक ाप ूर्णअ वसर मिलेगा।

विधानसभा अध्यक्ष ने विधायको की कुशलता के प्रश्न के जवाब में कहा कि नए सदस्य जितने ज्यादा प्रशिक्षित होंगे, सदन उतने ही प्रभावशाली तरीके से चलेगा। जितना ज्यादा सदन चलेगा, उतना ही अधिक जनसमस्याओं का निराकरण हो सकेगा। यदि आवश्यक होगा तो नए सदस्यों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम तय किया जाएगा। डॉ. जोशी ने कहा कि चुनी हुई सरकार किसी भी पार्टी की हो, यह उसका उत्तरदायित्व होता है कि ब्यूरोक्रेसी से काम लें और ब्यूरोक्रेसी की जवाबदेही तब ज्यादा होगी, जब ज्यादा सदन चलेगा।

युवाओं की अपेक्षा के सवाल पर उन्होंने कहा कि आज के नौजवानों को हमसे बहुत अपेक्षाएं हैं। हमें इस विधानसभा में सड़क, बिजली व आधारभूत सुविधाओं के विकास जैसे मुद्दों के साथ ही युवाओं की अपेक्षाओं पर भी खरा उतरना होगा। उन्होंने कहा कि शहरों तथा गांव के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समान रूप से अवसर मिलने चाहिए और गांव तथा शहर के बीच के शिक्षा के अन्तर को पाटना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि युवाओं के लिए तकनीक तथा नवाचारों का ध्यान रखते हुए नियम कानून बनाएं। हर नौजवान का सपना है कि उसे रोजगार तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

उन्होंने उम्मीद जताई कि उनके कार्यकाल में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच संवादहीनता जैसी कोई स्थिति पैदा नहीं होगी। उन्होंने कहा कि मेरी जिम्मेदारी होगी कि संवाद सभी पक्षों में हो, ताकि हम सार्थक चर्चा कर सकें और संसदीय परंपरा की यही आवश्यकता भी है। हम अपने विचार, मतभेद रख सकते हैं, लेकिन डायलॉग तो होना ही चाहिए, मनभेद नहीं होना चाहिए।

डॉ. जोशी ने कहा कि वर्ष 1952 से अब तक राज्य विधानसभा में कई ऐसे नियम कानून बने, जिनसे प्रदेश का विकास चरमोत्कर्ष पर पहुंचा है। इन्हीं कानूनों के माध्यम से आज किसान को अपनी जमीन का मालिकाना हक मिलने का सपना साकार हो सका है।

विधानसभा अध्यक्ष ने सदस्यों से अपेक्षा की है कि प्रदेश की जनता अपनी अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सदन के प्रति आशान्वित है। यह राजस्थान विधानसभा संसदीय परंपराओं के निर्वहन के साथ प्रदेश की अपेक्षाओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बने, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

स्थानीय मुद्दे और विधायक के रूप में उनकी जिम्मेदारी पर किए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि मूल रूप से मैं एक विधायक हूं और विधायक के जो दायित्व और कर्तव्य अपने क्षेत्र के प्रति होते हैं, उनका में पूर्ण निष्ठा और प्रतिबद्धता से निर्वहन करुंगा। नाथद्वारा में मूलभुत सुविधाएं सुचारू रूप से चलती रहे एवं जो यहां की प्रमुख समस्याएं हैं, वह मुझे मालूम है। उन्हें पूरा करना और नाथद्वारा का विकास मेरी प्राथमिकता रहेगी।

मैंने जिला अधिकारियों की एक बैठक में आगाह कर दिया कि आम जनता की जो जरूरत की आवश्यकता है, उन्हें तुरंत और प्रभावी ढंग से निस्तारित करें। शिक्षा और चिकित्सा सेवा सहज और सुलभ ढंग से लगातार उपलब्ध होती रहे। क्षेत्र में कार्मिकों का अभाव न रहे, इसके लिए प्रयास किए जाएंगे।

नाथद्वारा के विकास को रोजगारोन्मुखी बनाना मेरा सपना है और आप सब लोगों के सुझाव से सभी को साथ लेकर हम नाथद्वारा के और संपूर्ण विधानसभा क्षेत्र जो भी आवश्यक होगा, उसे मैं पूरा करुंगा और यह मेरी जिम्मेदारी है।

अरविंद मुखिया
वरिष्ठ पत्रकार नाथद्वारा

मानवता का सच्चा सिपाही डॉ. खिलनानी

कहते हैं दुनिया में देवदूत आते रहते और मानव रूप में कई ऐसी शख्सियत हुई, जो थे तो इन्सान मगर कहीं ना कहीं उनमें ईश्वर का अंश प्रतीत होता रहा है। सदियों से मानव सभ्यता प्रकृति और परमात्मा को पुजती रही है। दुनिया में परमात्मा के बाद यदि किसी को भगवान का दर्जा मिला तो वो मसीहा वैद्य, डॉक्टर है, जो बीमार शरीर को सफा देता है, रोग मुक्त करता है। कहते हैं पहला सुख निरोगी काया, मगर रोग होना स्वाभाविक है। क्योंकि मानव शरीर व्याधि का मंदिर है। हर इंसान जीवन में बीमार होता है और अस्पताल जाता है। सरकार भी अपने स्तर पर हर शहर- गांव में चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाती है और निजी संस्थाएं भी देश में छोटे बड़े हॉस्पिटल से मानव जीवन को सुरक्षा देने के लिए जानलेवा रोगों तक का ईलाज करते हैं।

देश का बहुत बड़ा वर्ग गरीब व अशिक्षित वर्ग में आता है और गांव ढ़ाणियों में गुजर बसर करता है। हर आदमी इतना सक्षम नहीं होता कि वो बड़े अस्पताल में जाकर अपना ईलाज करवा सके और बड़े खर्च को वहन कर सकें। आज भौतिकवादी संस्कृति में सेवा के कार्य भी व्यवसाय बन गए है। चिकित्सा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। सब जगह अच्छा ईलाज करवाने के लिए पैसो का बोलबाला है, बिना रूपए खर्च किए शायद अच्छी सेवा समय पर मरीज को मिलना असंभव सा हो गया है।

एक तरफ देश का गरीब निर्धन वर्ग दूसरी तरफ धनकुबेर बनने की लालसा में पढ़ा लिखा, नौकरी पेशा समाज इस द्वन्द में मानव सेवा का संकल्प लेकर एक चिकित्सक हाथ में दवाइयों का थैला और चिकित्सा की सारी सामग्री ले मसीहा बन रोज गांव की और निकल पड़ता है। मानव और रोगियों की सेवा के लिए **डॉ. विजय कुमार खिलनानी** गरीब, बीमार, लाचार, दीन दु:खी के हमदर्द बनकर ये सेवा का मिशन अनवरत बरसों से चला रहे हैं।

सरकारी सेवा में होकर अपनी जरूरत के बाद की सारी तनख्वाह से दवाइयां, कपड़े, भोजन सामग्री वस्त्र आदि ले दूर दराज के गांव की गरीब बस्तियों में अपने वाहन से जाकर ईलाज करते हैं और समाज सेवा भी मुफ्त कोई किसी तरह का दिखावा नहीं, डॉ. विजय अपने स्तर पर करते हैं। महंगी दवाइयां खरीदना उस गरीब जो अपने व अपने परिवार का पेट भरने के लिए संघर्षरत है, के लिए आसान नहीं, तब एक मसीहा पहुंच जाता है, आशा की किरण लेकर जिस घर में बीमार बिना ईलाज के खाट पर पड़ा है, अपनी तकलीफ गरीबी की फटी चादर में लपेट कर और निराश अंधकार में डूबा हुआ। जीवन मृत्यु के बीच झुलती रोगग्रस्त जिन्दगी को बचाने की जद्दोजहद के बीच अपना झोला लेकर उस घर और गांव की चौपाल तक और शुरू करता है मरीज़ों की सेवा का कार्य। ना जाने कितने बच्चों, युवकों, महिलाओं, बुजुर्गो का ईलाज करके जीवनदान दे चुके हैं। पूर्व न्यायाधीश डॉ. बसन्तीलाल बाबेल ने अपने विचार यूं बया किए कि डॉ. खिलनानी दीन दु:खियों के दर्द पर केवल आंसू बहाने वाले व्यक्ति नहीं है, अपितु उन आंसुओं को पौंछने वाले है।

डॉ. विजय का जन्म आजादी से पहले कराची (पाकिस्तान) में 30 मई 1945 को हुआ। इनके पिता डॉ. बुलचंद खिलनानी नामी चिकित्सक व स्वतंत्रता सेनानी थे। अंग्रेजी हुकूमत की अपने क्षेत्र में खिलाफत करने से ब्रिटिश सरकार ने जब उनके खिलाफ शूटर या अरेस्ट का ऑर्डर जारी कर दिया, तब वे कराचीं छोड़कर दिल्ली आ गए, जहां पंडित जवाहरलाल नेहरू से मिले। नेहरू ने मोहनलाल सुखाड़िया के नाम चिट्ठी लिख उन्हें मेवाड़ में उदयपुर भेज दिया। फिर वे देवगढ़ आए व कपड़े बनाने का कार्य करने लगे, मगर वे इस कार्य से संतुष्ट नहीं हुए। उसी दौरान महामारी फैलने देवगढ़ कस्बे की सड़कों से रोज लाशें निकलने लगी, जिसे देखकर उनका मन उचट गया। क्योंकि देवगढ़ से उन दिनों भीलवाड़ा, अजमेर व उदयपुर तक के लिए समुचित यातायात के साधन नहीं थे। इस वजह से बीमार का वक्त पर ईलाज नहीं होने से मृत्यु हो जाती थी।

ये हालात देखकर डॉ. बुलचंद ने तीन दिन में अजमेर जाकर कुछ दवाइयां खरीदकर लाए और देवगढ़ में गरीब, बीमार लोगों का इलाज शुरू किया। चूंकि तब तक अंग्रेजी दवाइयों का प्रचलन नहीं होने से थोड़ी सी दवा भी असरकारक सिद्ध होने लगी और जल्द ही बीमार लोग स्वस्थ होने लगे। देवगढ़ के साथ आस पास व दूर दराज के गांवों से भी लोग इलाज के लिए आने लगे थे। धीरे धीरे मरीजों की संख्या कम हो गई, तब डॉ. बुलचंद को घर की याद आने लगी। लंबे समय तक परिवार से दूर रहे, जिससे परिवार वाले भी चिंतित होंगे, इसलिए उन्होंने पुन: कराचीं जाने का निर्णय लिया। मगर देवगढ़ गांव वाले उन्हें भेजने को राजी नहीं हुए, तो उन्हें अंदेशा था कि जिन्ना और नेहरू मानेंगे, नहीं और देश के दो टुकड़े होने लगभग तय है। इसी अंदेशे पर उन्होंने वादा किया कि वे जब भी आएंगे, तब देवगढ़ ही आकर रहेंगे। वक्त के साथ देश के टुकड़े हुए और डॉ. बुलचंद के साथ करीब 150 लोग कराचीं छोड़कर उनके साथ देवगढ़ पहुंचे और धीरे धीरे नौकरी मिलने के साथ देवगढ़ छोड़ गए, मगर डॉ. बुलचंद देवगढ़ में ही बस गए।

इधर देश भी आज़ादी की हवा में सांस ले रहा था और कराचीं पाकिस्तान में चला गया। सारी सम्पत्ति वहीं छूट गई, वो हिन्दुस्तान में बस गए। बेटे विजय कुमार खिलनानी को चिकित्सक बनाने का सपना था, मगर डॉ. विजय बचपन से ही खाने पीने, खेलने कूदने व पहलवानी के शौकीन थे। उन्हें डॉक्टरी की पढ़ाई करने की इच्छा नहीं थी, लेकिन डॉ. बुलचंद ने उन्हें एसएमएस जयपुर में दाखिला दिला दिया। वहां भी विजय का मन नहीं लगता, फिल्म देखने के शौकीन थे। एक बार प्रोफेसर ने उन्हें डांटकर कहा तुम यहां क्या बनने आए हो। उन्होंने कहा डाक्टर बनने, तब उन्होनें कहा कोई भी यहां डाक्टर नहीं, ना मैं, ना तुम, ना कोई और। डाक्टर सिर्फ़ एक है, वो परमपिता परमात्मा। प्रोफेसर ने कहा तुम अभी दशहरा की छुट्टियां आ रही, उसमें घर मत जाना। चार दिन का विशेष सेमिनार लग रहा है, उसमें देश के जाने माने डॉक्टर और सन्त लोग आ रहे हैं। चार दिन के उस सेमिनार ने डॉ. विजय की ज़िन्दगी बदल गई। सभी की स्पीच सुन कर उन्हें लगा ज़िन्दगी मानव सेवा के लिए है।

गुरुदेव आंनद मूर्ति से प्रभावित होकर उनसे मुलाकात के बाद डॉ. विजय ने 1965 में आनंद मार्ग की दीक्षा ले ली। उसी पथ पर चलने लगे, तो सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह उनके जीवन का सुत्र बन गया। लालच का कोई अन्त नहीं, मगर साथ सिर्फ सेवा का कर्म जाता है। गुरुदेव की यह बात इनके मन में बैठ गई। बस फिर क्या...। कमाना और मानव सेवा में लगा देना। उनकी धर्म पत्नी डॉ. पुष्पा खिलनानी भी अंतिम सांस तक इस पथ पर सदा उनके साथ रही।

डॉ. खिलनानी आनंद मार्ग स्कूल भी अपने खर्चे से संचालित कर रहे हैं। मानव सेवा का ऐसा जुनून हिन्दुस्तान के हर डॉक्टर में हो तो देश में रोगग्रस्त लोगों का जीवन खुशहाली में बदल सकता है। मानवता की ऐसी मिसाल राजसमन्द के इस छोटे से ज़िले में डॉ. खिलनानी है। उनकी साहित्य में भी रूचि है। वे देशभक्ति के जज्बे पर अपनी कलम चलाते हैं। देशभक्ति के स्वर जैसी किताबें लिखकर समाज को साहित्य का महत्व बताते हैं, जिस गांव ढाणी में वो शिविर लगाते हैं। वहां चिकित्सा के साथ सत्संग भी करते रहते हैं।

डॉ. विजय के पास ज्यादातर गांव ढाणी के गरीब व असहाय मरीज सूचीबद्ध है और हर मरीज की दवा कब खत्म होगी, तो दूसरी डॉज कब देनी है, इसका पूरा ख्याल रखते हैं। इसी आधार वे प्रतिदिन हर गांव-ढाणी में जाने का कार्यक्रम तय करते हैं। इस कार्य में एक टैक्सी चालक मुकेश साहू जो सिर्फ ड्राइवर नहीं, बल्कि इनका एक सहयोगी भी है, जो उनके साथ रहकर रूट प्लान करता है और कई बार डॉ. खिलनानी के लिए भी खाना वह घर बनाकर लाता है। चिकित्सा के साथ सेवा के अन्य कार्यों में भी भरपूर सहयोगी है। इनके सम्पर्क में आने के बाद कई लोगों के जीवन की धाराएं बदल गई है। जहां एक तरफ भौतिक सुख सम्पत्ति ही सफलता का पैमाना है, वहीं इनके जीवन को देखकर कई लोगों ने सेवा को जीवन की सफलता का मूल मंत्र बना दिया है। इन्होंने सेवा के लिए सेवा धर्म मिशन का गठन किया है, जिसके जरिये बच्चे, युवाओं से लेकर वृद्धों तक को जोड़ रहे हैं। जो अपने स्तर पर सेवा कार्य करते रहते हैं। खास बात यह है कि डॉ. खिलनानी किसी से सेवा कार्य में भी आर्थिक मदद नहीं लेते हैं और इसका कारण बताते हैं कि न जाने किस तरह से कमाया हुआ यह धन है, जो मुझे जन सेवा के लिए देना चाह रहा है। चूंकि सद्मार्ग से कमाया हुआ धन ही किसी को फायदा पहुंचा सकता है।

इलाज के साथ हरसंभव सहयोग

अनहोनी घटना के शिकार व बेसहारा परिवारों के लिए वे हरसंभव सहयोग को तत्पर रहते हैं। अखबार में पढ़कर ऐसे दीन-दुखियों की सेवा में निकल पड़ते हैं और इलाज के साथ राशन सामग्री, बिस्तर, कपड़े सहित कई घरेलू सामान पहुंचाते हैं। अक्सर उनके स्कूटर पर एक बैग हमेशा रहता है, जिसमें दवाओं के साथ कुछ बिस्कीट, जूते, कपड़े, शॉल, कम्बल हमेशा साथ रहती है। यही सबकुछ सामग्री उनके ड्राइवर मुकेश की कार में भी मिल जाते हैं और वह भी जरूरतमंद को की मदद करता रहता है।

डॉ. खिलनानी का व्यक्तित्व और कृतित्व समाज सेवा का नायाब बेमिसाल फलसफा है। सचमुच में डॉ खिलनानी रविन्द्रनाथ टैगोर के एकला चालो रे... के सत्य को स्वीकार करते हुए निरन्तर गतिशील है। वो सेवा के इस पथ पर चलते रहे, समाज को मार्गदर्शन देते रहे। इसी मंगलकामना के साथ सेवानिवृत्त वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी डॉ. विजय के निस्वार्थ सेवा भाव को सलाम करते हैं।

प्रस्तुति :

राहुल दीक्षित व
विजय शर्मा काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिए-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

चुनावी वादों की सच्चाई

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

मैं कल टीवी पर नायक फिल्म देख रहा था, जिसमें अभिनेता अनिल कपूर ने मुख्यमंत्री के रूप में सिर्फएक दिन में अपने प्रदेश के हालात को बदल दिया। जनता के दु:ख दर्द का सहायक बन पूरे प्रदेश में चमत्कारी नेता का रोल अदा किया। फिल्म देखने के बाद एकाएक मन में यह ख्याल आता है कि यह फिल्मों की कल्पना हकीकत में क्यों नहीं बदलती है। कभी फिल्में भारत की हकीकत बयां करती थी और नायक हमारे राजनेताओं की नकल करते थे, मगर आज के नेताओं को फिल्मी नायकों की नकल करनी पड़ रही है। आज के नेता नायकों की तरह एक अच्छे अदाकार बन गए हैं। आजकल की राजनीति पर अदाकारी का इतना प्रभाव है कि हर नेता को कुछ ना कुछ दिखावा कर जनता के सामने पेश होना पड़ता है। चुनाव के दौरान अलग अलग तरीके से प्रभावशाली भाषण के जरिए नेता जनता को अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हैं। जनता भी उनके प्रभाव में आकर अपने नेता में नायक फिल्म के एक आदर्श नेता की तरह छवि ढूंढने लगती है। उन दिनों जनता में एक भय मिश्रित माहौल बनाया जाता है कि यदि हमारी इस नैया को कोई पार कर सकता है, तो हमारे यह नेताजी हैं, मगर जो सुनहरे बादल चुनाव के दौरान दिखाए जाते हैं। परिणाम आने के बाद बिना एक बूंद गिराए धीरे धीरे छंट जाते हैं। चुनाव जीतने के दबाव में नेताजी ने क्या क्या वादे किए, ये नेताजी खुद भूल जाते हैं। और रही बात जनता की, तो जनता कौनसी बादाम खाकर चुनाव के वादों का हिसाब मांगने वाली है। पिछले लोकसभा चुनाव में कितने वादे किए गए और उन वादों में से कितने पूरे हुए, कितने नहीं, किसको चिंता है? सरकार ने 5 साल में आखिर कितने काम किए हैं। इतने काम तो आजकल फिल्मों में भी नहीं दिखाई देते हैं।

फिल्मों में नेता सिर्फ दो या तीन बार विदेश जाते हुए दिखाई देते हैं, मगर हमारे नेता सुबह 4 बजे उठकर रवाना होते हैं और शाम होते होते आठ- दस देशों की यात्रा करके आ जाते हैं। उनके ड्रेस और उनके डेकोरम को देखकर ही लगता है, यह बड़े दबंग और कर्मठ नेता है। उनकी रोबदार आवाज को देखकर ही जनता अपना दु:ख दर्द भूल जाती है कि उन्होंने 5 साल पहले कौनसे वादे किए थे। अब जनता को भी उन पुराने वादों को तो भूल ही जाना अच्छा है। रोज- रोज पुराने ख्वाब देखने में क्या मजा है। आज कुछ नया ख्वाब देखा जाए और हमारे नेता नए ख्वाब दिखाने में बड़े ही माहिर है। अभी हमारे विपक्ष के नेताजी राहुल गांधी का ड्रेस कोड देखते ही कोई भी आदमी एक जुझारू, कर्मठ कार्यकर्ता को देख लेता है। उनकी कुर्ते की बड़ी- बड़ी बांहे, जिन्हें भाषण के दौरान तीन चार बार ऊपर चढ़ाया जाता है, जिसे देखते ही लोगों को लग जाता है कि यह नेता कार्य करने को कितना उत्सुक है, जिसे कोई मौका नहीं मिल रहा है। अभी प्रदेश चुनाव के कर्जमाफी के वादे में कितना सच रहा और कितना झूठ। इससे क्या लेना- देना, किसान को वैसे भी कौनसी जल्दी है। अभी यह लोकसभा का चुनाव आ गया है। यह होते ही और नए वादे होंगे, उन वादों में सच्चाई ढूंढ़ेंगे।

आजकल तो प्रियंका गांधी के बड़े चर्चे है। प्रियंका गांधी को देखते ही हर किसी को इंदिरा गांधी याद आ जाती है। प्रियंका ने अपनी हेयर स्टाइल और साड़ी पहनने का तरीका भी ऐसा रखा है कि दूर से देखने पर भ्रम होता है कि जैसे इंदिरा गांधी ही पुनर्जीवित होकर लौट आई हो, लेकिन क्या प्रियंका गांधी को भी आयरन लेडी का खिताब मिलेगा या ऊपर ऊपर आयरन लगा हुआ होगा और अंदर वाड्रा की विवादित जमीन की मिट्टी भर दी जाएगी, यह तो वक्त बताएगा। बहरहाल, बजट के नए वादों में अपने दिल को प्रसन्न करने का जनता प्रयास कर रही है। कहा जा रहा है कि यह यह अंतरिम बजट है, चुनाव जीत गए तब इस बजट को लागू किया जाएगा और चुनाव नहीं जीते, तो फिर इसमें बजट बनाने वाले का क्या दोष। आपको तो यह बजट दिया भी इसीलिए गया है कि आपको सत्ताधारी दल को जिताना है। यदि आपको यह वादे अच्छे लगे तो लगे, तो आपको जीत दिलानी है। वैसे सपने जितने मीठे होते हैं, हकीकत का फल कहां इतना मीठा हो पाता है। मेरे हिसाब से राजनेताओं को फिल्मों की तरह अभिनेताओं का दर्जा मिल जाना चाहिए और राजनीति को सिर्फ फिल्मी तरीके से ही देखने का प्रयास करना चाहिए। इस राजनीति के वादों में सच्चाई ढूंढना गधे के सिर पर सिंग ढूंढने के बराबर हैं।

गर्भ में पलती बेटी से क्यों नहीं प्रेम

एक स्त्री एक दिन एक स्त्रीरोग विशेषज्ञ के पास के गई और बोली– डॉक्टर मैं एक गंभीर समस्या में हूं और मैं आपकी मदद चाहती हूं। मैं गर्भवती हूं।

आप किसी को बताइएगा नहीं। मैंने एक जान पहचान के सोनोग्राफी लैब से यह जान लिया है कि मेरे गर्भ में एक बच्ची है। मैं पहले से एक बेटी की मां हूं और मैं किसी भी दशा में दो बेटियां नहीं चाहती।

डॉक्टर ने कहा, ठीक है, तो मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं। तो वह स्त्री बोली– मैं यह चाहती हूं कि आप इस गर्भ से छुटकारा दिलाने में मेरी मदद करें।

डॉक्टर ने थोड़ा सोचा और फिर बोला–

मुझे लगता है कि मेरे पास एक और सरल रास्ता है, जो आपकी मुश्किल को हल कर देगा। यह सुनकर वह स्त्री बहुत खुश हो गई। डाक्टर आगे बोला– हम एक काम करते हैं। आप दो बेटियां नहीं चाहती ना ?

तो पहली बेटी को मार देते हैं, जिससे आप इस अजन्मी बच्ची को जन्म दे सके और आपकी समस्या का हल भी हो जाएगा। वैसे भी हमको एक बच्ची को मारना है, तो पहले वाली को ही मार देते है।

वह स्त्री तुरंत बोली– नहीं डाक्टर। बिलकुल नहीं, ये एक गुनाह और पाप होगा और वैसे भी मैं अपनी बेटी को बहुत चाहती हूं। उसको खरोंच भी आती है, तो दर्द का अहसास मुझे होता है।

डाक्टर तुरंत बोला– पहले की हत्या करो या अभी जो जन्मा नहीं, उसकी हत्या करो, दोनों गुनाह है, पाप हैं।

स्त्री स्वयं की सोच पर लज्जित हुई। डॉक्टर की वह बात उस स्त्री को समझ आ गई और पश्चाताप करते हुए घर चली गई। क्या आपको समझ में आयी ? अगर आई तो दूसरो को भी समझाए।

कन्याभ्रूर्ण हत्या अपनी ही औलाद का अपने हाथो से गला घोट देने जैसा है। इससे बड़ा गुनाह दुनिया में कोई नहीं।

जो आदत हमें कमजोर बनाए वही नशा है : मुनि सम्बोध

राजसमंद. अणुव्रत समिति राजसमंद द्वारा मुनि सुरेश कुमार के सान्निध्य में सौपान इन्स्टीट्युट में स्कील इण्डिया डवलपमेन्ट कार्यक्रम में मुनि सम्बोध कुमार ने कहा जिन्दगी उन्हीं की है, जिनके पास मुस्कराने की कोई वजह है । इस दौर में जाने अनजाने रोज हम हंसी को खर्च कर रहे हैं और तनाव को कमा रहे हैं। वे यहां होटल मेनेजमेन्ट कोर्स कर रहे छात्र–छात्राओं के बीच बोल रहे थे। उन्होंने कहा कोई भी आदत जो हमें कमजोर बनाए, वही नशा है। हम जब दुनिया में आए तब रो रहे थे, जीवन को कुछ इस तरह जी कर जाए। जब हम आंखें मुंदे चेहरे पर मुस्काराहट हो और सारी दुनिया हमारी याद में आंसू बहाए। अणुव्रत समिति मंत्री डॉ. वीरेन्द्र महात्मा ने कहा नशा विनाश का रास्ता है। इसलिए अपनी रगो तक किसी भी नशे को अपनी पहुंच बनाने के लिए कामयाब न होने दें। समिति अध्यक्ष अचल धर्मावत ने कहा इन्सान को सही मायने में इन्सान बनाता है। अध्यक्षता मुलचन्द भालावत ने की। इन्स्टीट्युट प्रबन्धक संगीता माहेश्वरी ने अतिथियों का स्वागत किया। स्लोगन प्रतियोगिता में के विजेता छात्रों का गणेश कच्छारा व मिश्रीलाल बोहरा द्वारा सम्मान किया गया। रमेश माण्डोत ने आभार जताया। इस दौरान अशोक डूंगरवाल, ज्योत्सना पोखरना, राकेश लोढा, हिम्मत बाबेल थे।

मौत के सौदागर गड्ढों से स्वराज कब तक

अप्रैल 2014 में उच्चतम न्यायालय द्वारा गठित सड़क सुरक्षा समिति की रिपोर्ट पर अदालत ने चिंता व्यक्त की है। देश में सड़क पर गड्ढों के कारण लगातार बढ़ते मौतों के आंकड़ों पर समिति की रिपोर्ट ने एक बार फिर से सार्वजनिक निर्माण विभाग से लेकर पंचायतों, प्राधिकरणों, प्रशासन और नगर निकायों के दावों की पोल खोल दी है। उच्चतम न्यायालय ने पूर्व न्यायाधीश केएस राधाकृष्णन की अध्यक्षता वाली अदालत की सड़क सुरक्षा समिति की रिपोर्ट का अवलोकन कर सड़क के गड्ढों से बढ़ती मौतों पर केंद्र और राज्यों से जबाब से मांगा है। अदालत ने गड्ढों की वजह से सड़क दुर्घटनाओं में बढ़ती मौतों को अस्वीकार्य बताते हुए कहा है कि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण एवं अन्य विभाग सडकों का ठीक से रखरखाव नहीं कर रहे हैं।

इस रिपोर्ट के अनुसार देश में 2013 से 2017 के दौरान गड्ढों की वजह से हुई सड़क दुर्घटनाओं में 14,926 लोगों की मौत हुई है। न्यायालय ने इस आंकड़े को सीमा पर आतंकवादी घटनाओं में मारे गए लोगों से भी अधिक बताया है। अदालत ने सड़क हादसों की वजह से तबाह होने वाले परिवारों को मुआवजा नहीं दिए जाने पर भी नाराजगी जताई है। एक रिपोर्ट के अनुसार इन हादसों के आधे से ज्यादा पीड़ित ऐसे होते हैं, जिन्हें पात्र होने के बावजूद मुआवजा नहीं मिल पाता है। वर्ष 2014-15 के दौरान बीमा कंपनियों ने करीब 11,480 करोड़ का मुआवजा दिया, लेकिन आधे पीड़ितों को यह सुविधा नहीं मिल पाई। क्योंकि उन्हें इसके बारे में पता ही नहीं था।

इससे पहले 20 जुलाई को भी शीर्ष अदालत ने गड्ढों से होने वाली मौतों पर चिंता व्यक्त की थी। देश में बारिश आते ही घटिया निर्माण की वजह से आसपास की सड़कें जगह- जगह पर टूट जाती हैं और कुछ ही दिनों में एक गहरे गड्ढों में तब्दील हो जाती हैं, लेकिन इसके बावजूद देश में लोग कष्ट सहकर गाड़ियां चलाते रहते हैं। कभी किसी प्रशासनिक अधिकारी या नेता से इस बारे में सवाल नहीं पूछते हैं। इसीलिए तंत्र तमाशबीन हो जाता है। क्योंकि उसे पता है कि गड्ढों से होने वाली मौत की जिम्मेदारी उस पर कभी नहीं आएगी। यह उस भारत की सच्चाई है, जो विश्व गुरु बनने का सपना देखता है। महाशक्ति बनने के लिए भारत ने जो रास्ता बनाया है। उसमें गड्ढे ही गड्ढे हैं। आजादी के 70 साल बाद भी हमारा तंत्र, हमारा प्रशासन और अलग- अलग सरकारें देश के लोगों को अच्छी और सुरक्षित सड़क नहीं दे पाए। हमारा तंत्र सड़कों पर चलने वाले हर वाहन के लिए रोड टैक्स वसूलता है, लेकिन सुविधा के नाम पर लोगों के साथ लगातार धोखा किया जाता है। वर्ष 2016 में देश की सरकारों ने मोटर व्हीकल टैक्स और फीस के रूप में करीब 60,000 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया था। यह रकम देश में बेचे गए एक करोड़ सत्तर लाख वाहनों के टैक्स के रूप में मिली थी, लेकिन जन सुविधा देने की बारी आती है तो लोगों को बदले में गड्ढों वाली सड़कें और परेशान करने वाला लंबा ट्रैफिक जाम मिलता है।

जिस गति से देश में वाहनों की संख्या बढ़ रही है। उसकी तुलना में अच्छी सड़कों के निर्माण की गति काफी धीमी है। रोड टैक्स और टोल टैक्स लेने के बाद देश के तंत्र की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह लोगों को बेहतर और सुरक्षित सड़क उपलब्ध कराए, लेकिन अफसोस हैं कए `साक भीन हींह ोताह ै ाग ड्वेव ालीइ न सड़कों को झेलने के अलावा लोगों के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं बचता है। क्योंकि हमारा तंत्र और प्रशासन गड्ढों को लेकर गंभीर नहीं हैं। कोई भी गड्ढों की वजह से होने वाली मौतों की जिम्मेदारी नहीं लेता है। यह देश की सड़कों पर होने वाला ऐसा आतंकवाद है, जिसका कोई विरोध नहीं होता। इस पर कोई कार्यवाही नहीं होती है। हमारा लापरवाह तंत्र आराम से चाय पीते हुए दुर्घटनाओं के आंकड़े गिनता हुआ दिखाई देता है। पिछले चार वर्षों में गड्ढों की वजह से लगभग 40,000 सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं, जिनमें 15,000 लोगों की जान गई। यानी हर रोज सिर्फआठ लोगों की मौत गड्ढों की वजह से होती है और हर वर्ष औसतन 4,000 लोगों की मौत गड्ढों की वजह से हो जाती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2016 में 2,983 लोग खराब सड़कों की वजह से मारे गए। वहीं, 589 लोगों की सड़कों की खराब इंजीनियरिंग की वजह से और 1613 लोगों की सड़कों पर कम रोशनी की वजह से जान चली गई। कारगिल युद्ध में भारत के 527 जवान शहीद हुए थे। यानी एक युद्ध में जितने सैनिक मारे जाते हैं। उससे कई गुना ज्यादा लोग हमारे देश की सड़कों के गड्ढों की वजह से मारे जाते हैं। लेकिन इसके बावजूद हमारा तंत्र, देश के प्रशासन और अलग राज्यों की सरकारों की नींद कभी नहीं टूटती है।

ऐसे मामलों में इंजीनियर या सड़क बनाने वाले ठेकेदार पर कभी सवाल नहीं उठाए जाते हैं। उन पर कभी मुकदमे नहीं चलाए जाते हैं और किसी की मौत के लिए उन्हें कभी दोषी नहीं ठहराया जाता है। अक्सर देश में जब भी किसी सड़क दुर्घटना में किसी निर्दोष की जान जाती है तो उसे लोग बदकिस्मती मान लेते हैं। कहते हैं शायद ऊपर वाले को यही मंजूर था। लेकिन लोग ऐसी दुर्घटनाओं की असली वजह की तलाश कर समस्या की जड़ में नहीं जाते हैं। लोगों में जागरूकता की कमी के कारण हमारे तंत्र की बड़ी- बड़ी लापरवाही छुप जाती हैं। मौत वाले गड्ढे देश के हर शहर की सड़कों पर दिखाई देते हैं और कुछ ही दिनों में सैकड़ों लोग इन गड्ढों की वजह से मारे जाते हैं। यह ऐसे लोग हैं जिनके मरने से न तो किसी नेता को कोई फर्क पड़ता है, न ही किसी अफसर को। देश में घटिया निर्माण कार्यों से होने वाली मौतों और दुर्घटनाओं की जिम्मेदारी कोई नहीं लेता है। लेकिन इन मौतों के लिए तंत्र की जवाबदेही तय होनी चाहिए।

इस मामले में भारत पडोसी देश चीन से शिक्षा ले सकता है। चीन ने अक्टूबर 2016 में घटिया निर्माण और पानी की सप्लाई से जुड़ी लापरवाही करने वाले 6000 अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया था। इसी तरह मई 2017 में हांगकांग में निर्माण कार्य से जुड़ी कंक्रीट टेस्ट रिपोर्ट में गड़बड़ी करने के लिए 21 कर्मचारियों को गिरफ्तार कर लिया गया था। जब तक देश में प्रशासन की जिम्मेदारी तय नहीं होगी और दोषियों को सजा नहीं मिलेगी, तब तक देश को गड्ढों से मुक्ति नहीं मिलेगी। वहीं शहर की सिवरेज व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग मेनहॉल भी सड़क दुर्घटनाओं का महत्वपूर्ण कारण है। लेकिन देश की नगर निकाय अक्सर इनको ढकना ही भूल जाती हैं। यह मेनहॉल सड़कों पर पैदल चलने वाले लोगों और दुपहिया वाहन चलाने वाले लोगों के लिए जानलेवा साबित होते हैं, लेकिन यहां गलती सिर्फ नगर निकायों की नहीं है। क्योंकि देश में लोग मेनहॉल के ढक्कन भी चुरा लेते हैं।

पूरी दुनियां में भारत और चीन ही ऐसे देश हैं, जहां मेनहॉल्स के ढक्कन चुराए जाने की ज्यादा घटनाएं होती हैं। देश में अक्सर मेनहॉल कवर को चुरा लिया जाता है और कई बार नगरपालिकाएं कवर लगाती भी नहीं है। इसकी वजह से सड़कों पर बड़ी संख्या में हादसे होते हैं। वहीं, अमेरिका में मेड इन इंडिया

मेनहॉल्स का इस्तेमाल किया जाता है, जो मेनहॉल कवर भारत में विकृतियों के साथ सड़कों पर लगाए जाते हैं। देश में बने वही कवर अमेरिका जैसे देशों में कई वर्षों तक खराब नहीं होते हैं। दरअसल इसके लिए मेनहॉल के कवर की मजबूती के साथ- साथ तंत्र की मजबूत इच्छाशक्ति भी जिम्मेदार है। जिसका असर भारत की सड़कों पर हर जगह दिखता है। खराब सड़क और गड्ढों की दुर्घटनाओं के पीड़ितों को अलग से मुआवजा मिलना चाहिए। लोगों की जान लेने वाले घटिया तंत्र, ठेकेदार, सरकारी अधिकारियों और मंत्रियों पर आपराधिक मुकदमा चलना चाहिए।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि सड़कों के निर्माण कार्य के कॉन्ट्रैक्ट में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार होता है। जिसकी वजह से कार्य की गुणवत्ता खराब होती है और बाद में यही भ्रष्टाचार लोगों की जान ले लेता है। परिवहन मंत्री नितिन गडकरी द्वारा रोड एक्सिडेंट्स इन इंडिया रिपोर्ट में दी गई जानकारी के अनुसार देश में हर साल करीब पांच लाख सड़क हादसे होते हैं। जिनमें डेढ़ लाख लोग हर बर्ष अपनी जान गंवा देते हैं, लेकिन इन डेढ़ लाख लोगों के मारे जाने का सवाल कभी राजनीतिक मुद्दा नहीं बनता है। भारत सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2017 में सड़क हादसों ने 20457 तो केवल पैदल यात्रियों की ही जान ले ली। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि मारे जाने वाले आधे लोगों में 15 से 35 आयु वर्ग के होते हैं।

अच्छी सड़कें और अच्छा ड्रेनेज सिस्टम मिलना देश के हर नागरिक का बुनियादी अधिकार है और यह सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह लोगों को अच्छी सड़कें मुहैया कराए। देश में दुर्घटनाओं को अक्सर किस्मत से जोड़कर देखते हैं, लेकिन अब वक्त आ गया है कि हम उन लोगों पर सवाल उठाएं जो असलियत में इन दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार हैं।

अश्विनी शर्मा
अध्येता, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
ashwinibhu6396@gmail.com
मोबाइल : 94558-66133

देस भगति री मेवाड़ी विभूतियां

'जिं दृढ़ राख्यो धरम नै तिहि राखै करतार।
ओ मेवाड़ रौ ऊंचो आदर्स हो, अर अणीज ख़ातर।।'

मेवाड़ रा रांणा, राणियां, भगतां, रेवासी नागरिकां आपणां स्वाभिमान अर देस रै खातर माथा कटवायर जगत मांहि उज्जवल इतिहास वणायो।

आज भारत रां मांयनै कोई राज्य है तो वो है राजस्थान। ई राजस्थान री वीरां री केण्यां सूं पौथ्यां री पौथ्यां भरियोड़ी मलेला। म्हैं भणी है स्व. पद्म श्री सूं पुरस्कृत राणी लक्ष्मी कुमारी चुंडावत री पौथी 'मांझल रात'। जींरी एकुएक केण्यां रूह खड़ा कर देवे। वीं पौथी नै 'वणां राणी साहिबा आपणा धायभाई स्व. मोडू दादा गुजर ने समर्पित करी ही। ' दूजी पौथी म्है भणी– मेवाड़ री विभूतियां, जींरो सम्पादन स्व. मोतीलालजी मेनारिया नै करियौ। आ पौथी स्व. महाराणा सा. मेवाड़ श्री भूपालसिंघजी रो आदेस सूं प्राथमिक कक्षा रा टाबर टाबरियां वी दाण भणता हा। वीं नै भण्यां पछै, म्है राष्ट्र भगति सूं ओत प्रोत राजस्थानी गीत लिख्यो। गीत रा बोल है–

जागो फौजी वीर सुण भारत मां री पीर।
आतंकी घेरयो रे भायां, केसरियां कसमीर।।
जागो रै पंजाबी जागो, हरियाणी जाट।
जागौ रै मेवाड़ी वीरां, मारो दे हब्बीड़ आतंकी।।

अस्या कई गीत म्हारी राजस्थानी पौथी 'आखर मंडिया मांडणा...' जो सन् 1994 में छपी अर वणी पै म्हनै पेली दाण राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति अकादमी बीकानेर सूं आर्थिक सहयोग दियो हो।

मेवाड़ी वां पुराणी केण्यां अर इतिहासां पै म्हनै घणो– घणो गुमेज है। मेवाड़ रां बाप्पा रावल सूं लेर लारला हेंग महाराणा में सांगा, प्रतापसिंह अर महाराणा राजसिंह नामी राणा वीया है। जणां आपणी आन बान अर सान खातर राज सुख छोड़ीन मेवाड़ अर भारत रो मान राख्यो। आज तईं उणांरा गुणगान गावतां लोग नी थाके। जगत में मेवाड़ ठाणा जे चार नाम मानेता रीया है। मेवाड़ रा वीरां ही नी वीरांगणा वां नारिया ई व्हेईगी, ज्यां यस गीत आज तक देस विदेस रा कंठा री सोभा है। इन मांहि म्है मेवाड़ री चार विभूतियां– पै चार लेणां लिखी जोई तरिया सूं है–

जेर पियो भगवान रा नाम पै, मीरा जिं भक्ति में नाम कमायो।
सीस नै काट सैनाण दियो, हाड़ी राणी हाथां सूं मेवाड़ बचाओ।
गुजरी धाय जिं पूत कटायर, सांगा रा पूत नै दूध चूधवायो।
राणा प्रताप, उदैसिंह पूत जिं, दिल्लीपति नै है धुल चटायो।

म्हारी तो अणां गणतंत्र दिवस अर स्वतंत्रता दिवस रै मौके पै बोलणे वाला देस रा हांकणिया अगुवां सूं अरज हेके– जनम देण वाली जननी अर जनम भौम रौ मान राखणोईज सबसूं मोटो धरम है। आ केण म्हारी नी भगवान श्री राम ..रामायण.. में कथ ग्या है। जे भारत, जे राजस्थान।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार कांकरोली

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

जिन्दगी पर भारी सपनों का बोझ

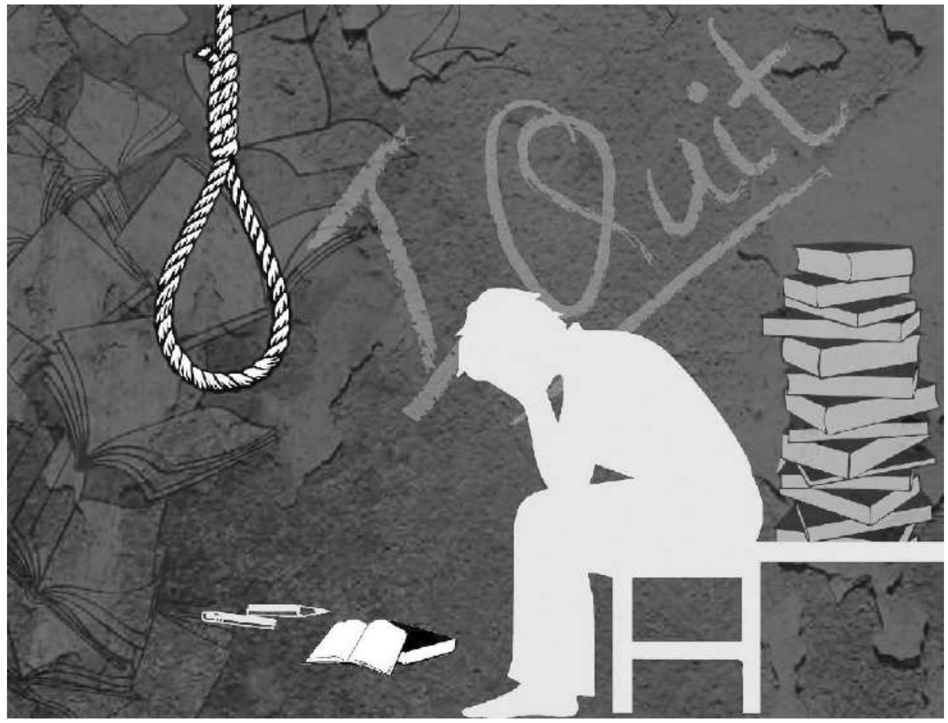

कोटा में आत्महत्या करने वाली छात्रा कृति ने अपने सुसाइड नोट में लिखा था किमैं भारत सरकार और मानव संसाधन मंत्रालय से कहना चाहती हूं कि अगर वो चाहते हैं कि कोई बच्चा न मरे, तो जितनी जल्दी हो सके। इन कोचिंग संस्थानों को बंद करवा दें। ये कोचिंग छात्रों को खोखला कर देते हैं। पढ़ने का इतना दबाव होता है कि बच्चे बोझ तले दब जाते हैं।

कृति ने लिखा है कि वो कोटा में कई छात्रों को डिप्रेशन और स्ट्रेस से बाहर निकालकर सुसाइड करने से रोकने में सफल हुई, लेकिन खुद को नहीं रोक सकी। बहुत लोगों को विश्वास नहीं होगा कि मेरे जैसी लड़की जिसके 90 फीसदी अंक हो, वो सुसाइड भी कर सकती है, लेकिन मैं आप लोगों को समझा नहीं सकती कि मेरे दिमाग और दिल में कितनी नफरत भरी है।

अपनी मां के लिए उसने लिखा– आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का फायदा उठाया और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रहीं। मैं भी विज्ञान पढ़ती रहीं, ताकि आपको खुश रख सकूं। मैं क्वांटम फिजिक्स और एस्ट्रोफिजिक्स जैसे विषयों को पसंद करने लगी और उसमें ही बीएससी करना चाहती थी, लेकिन मैं आपको बता दूं कि मुझे आज भी अंग्रेजी साहित्य और इतिहास बहुत अच्छा लगता है, क्योंकि ये मुझे मेरे अंधकार के वक्त में मुझे बाहर निकालते हैं।

कृति अपनी मां को चेतावनी देती है कि इस तरह की चालाकी और मजबूर करने वाली हरकत 11वीं क्लास में पढ़ने वाली छोटी बहन से मत करना, वो जो बनना चाहती है और जो पढ़ना चाहती है, उसे वो करने देना। क्योंकि वो उस काम को सबसे अच्छा कर सकती है, जिससे वो प्यार करती है।

इसकोप ढ़करम`राम नभ ीि वचलितह ेग याि कइ स होड़म– होड़ में हम अपने बच्चों के सपनो को छीन रहे हैं। आज हम लोग अपने परिवारों से प्रतिस्पर्धा करने लगे हैं कि फलां का बेटा–बेटी डॉक्टर बन गया। हमें भी डॉक्टर बनाना है। फलां की बेटी–बेटा उदयपुर, सीकर, कोटा, जयपुर हॉस्टल में है, तो हम भी वही पढ़ाएंगे, चाहे उस बच्चे के सपने कुछ भी हो। हम उन्हें अपने सपने थोंप रहे हैं।

आज हमारे स्कूल (कोचिंग संस्थान) बच्चों को परिवारिक रिश्तों का महत्व नहीं सीखा पा रहे। उन्हें असफलताओं या समस्याओं से लड़ना नहीं सीखा पा रहे। उनके जेहन में सिर्फ एक– दूसरे से प्रतिस्पर्धा के भाव भरे जा रहे हैं, जो जहर बनकर उनकी जिंदगियां लील रहा है। जो कमजोर है, वो आत्महत्या कर रहा है व थोड़ा मजबूत है, तो वो नशे की ओर बढ़ रहा है।

जब हमारे बच्चे असफलताओं से टूट जाते हैं, तो उन्हें ये पता ही नहीं है कि इससे कैसे निपटा जाएं। उनका कोमल हृदय इस नाकामी से टूट जाता है, इसी वजह से छात्र आत्महत्याएं बढ़ रही है।

अभिभावकों से निवेदन है कि आप अपने बच्चों को असफला को उनकी कमजोरी मत बनने दें। जिन्दगी बहुत कीमती है, जिसमें पढ़ाई–लिखाई जीविकोपार्जन के लिए मात्र 10 प्रतिशत रोल निभाती है।

जयवर्द्धन
की वार्षिक सदस्यता
मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

हॉकी के अद्भुत जादूगर खिलाड़ी थे कांकरोली के किशनलाल सनाढ्य

राजसमंद को खेलो की नगरी के नाम से जाना जाता रहा है। विशेष हॉकी आजादी के पहले से ही इस नगर का नामी खेल रहा है। श्री ब्रजभुषण महाराज, श्री बिठ्ठलनाथ महाराज ने श्री राजकिशन हाकीम के सहयोग से सन् 1935-36 में द्वारकेश क्लब टीम बनाई। कांकरोली में उदयपुर से मोहनलाल सुखाड़िया (पूर्व मुख्यमंत्री) युवा अवस्था में अपनी टीम लेकर आते थे। द्वारकादास जी (हवेली वाले), पुरूषोत्तमलाल जी, बसन्तीलाल जी, जयकिशन जी आदि उस वक्त के महाराज की टीम में खेलने वाले खिलाड़ी थे। बाद में सन् 1966-67 में श्री पराग कुमार जी, श्री शिशिर कुमार जी महाराज ने द्वारकेश टीम का नेतृत्व किया।

श्यामजी, किशन जी, मोहन जी, अमरसिंह जी (नायडू) आदि खिलाड़ी महाराजा क्लब से खेला करते थे। श्याम जी, किशन जी कांकरोली में हॉकी के जादूगर के नाम से मशहूर हुए। आज हम बात करते हैं, उन्हीं में से एक विभूति किशनलाल सनाढ्य के बारे में। उनका जन्म श्री द्वारिकाधीशम ंदिरम ार्गक ांकरोलीम ें श्र ाी हीरालाल सनाढ्य व श्रीमति तुलसी बाई के घर 5 अगस्त 1932 को हुआ। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। स्वभाव से जिद्दी और जुनूनी प्रवृत्ति के थे। समय के पाबंद और अनुशासन प्रिय थे। समय के इसी अनुशासन और कुछ कर गुजरने के जज्बे ने उनको जिन्दगी का नया आयाम दिया। विद्यालय में पढ़ाई के साथ खेल भी बच्चों को सिखाए जाते थे। स्कूल के ग्राउंड में पकड़ी हाथों में स्टीक और बॉल का तालमेल ताकत और नजर से बॉल को ओजल ना होने देने का जादुई हुनर और साथ उस पर जोड़ीदार मित्र खिलाड़ी श्यामजी वर्मा (बावा)का। श्याम-किशन की ये जोड़ी बचपन से लेकर युवा अवस्था तक एक साथ मैदान में उतरी, तो विरोधी टीम के पसीने निकाल देती। अच्छी और नामचीन टीमें इन दोनों के खेल के सामने पानी भरती नजर आती थी। विरोधी टीम जब हारती तो दर्जनों गोल उतारते उतारते समय खत्म होते होते कई गोल बाकी रहते। मैदान से बाहर होती और खेल प्रेमी जनता मैदान के अन्दर श्याम- किशन को गोद में उठा जीत के जश्न में आनंद से नाच उठती थी। खेल राजस्थान के किसी भी खेल मैदान में हो, श्याम- किशन का जलवा बरकरार रहता था। उनकी ख्याति राजस्थान से बाहर हिन्दुस्तान के कई राज्यों में फैलने लगी। उन्होंने महाराजा क्लब से खेलते हुए 1965 से 1985 तक कई खिताब टीम को दिलवाएं एवं स्वयं भी खेल रत्न बन मेवाड़ और कांकरोली (राजसमन्द) का नाम रोशन किया। हॉकी खेल के दौरान वे बैक पर तथा श्याम बैक फॉरवर्ड परख ेलतेथ े ाह ॅकीम ेंइ तनीत ाकतह ुआ करती थी कि उनकी तुलना तत्कालीन भारतीय टीम के दिग्गज खिलाड़ी पृथ्वीलाल सिंह से की जाती थी। किशन और श्याम को भारतीय हॉकी के जादूगर ध्यानचंद जी के साथ खेलने का अवसर मिला। वो भी श्याम- किशन के उत्कृष्ट खेल को देखकर काफी प्रभावित हुए और दिल खोल कर प्रशंसा की। भारतीय टीम में खेलने के लिए नए और चयनित खिलाड़ियों के प्रशिक्षण शिविर में किशन और श्याम का चयन हो गया, मगर क्षेत्रवाद और लालफीताशाही की संस्कृति का शिकार हो दोनों ही योग्य होने के बावजूद भारतीय टीम में खेलने से वंचित रह गए।

ये दुर्भाग्य ही राजसमंद की इन होनहार प्रतिभाओं का दमन कर गया, वरना राजसमन्द की मिट्टी के ये नायाब हीरें भी भारत का प्रतिनिधित्व कर राजसमन्द का नाम रोशन करते। इनका हॉकी में

समर्पण देखते हुए कांकरोली बालकृष्ण स्टेडियम के मुख्य पेवेलिनयन का निर्माण कर नगरपालिका ने उसका नाम श्याम किशन मोहन पेवेलियन रखकर उनके जैसे राजसमन्द के महान खिलाड़ियों को जो सम्मान दिया, वो युवा पीढ़ी के खिलाड़ियों को भी ऊर्जा का संचार देता रहेगा।

उन्होंने शिक्षक पद पर नियुक्त होकर सरकारी सेवा करते हुए शिक्षा प्रसार अधिकारी के रूप में शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्ति ली। खिलाड़ी होने के साथ ही खेल प्रशिक्षक के रूप में नगर के कई युवा प्रतिभाओं को तैयार किया। सोहन प्रकाश 'भीम', कन्हैयालाल राकां, परशुराम माड़साहब, ओम प्रकाश शर्मा, महेन्द्रसिंह गौरवा, मोईनुद्दीन रंगरेज, इन्द्रलाल सनाढ्य, विठ्ठल सनाढ्य, छून्नसिंह चौधरी जैसे कई खिलाड़ी हैं, जिन्होनें अपने खेल से उनके नाम को गौरवान्वित किया। कुछ खिलाड़ियों ने तो राजस्थान प्रदेश की टीम में खेल कर गुरुदक्षिणा स्वरूप उनको कई बार आनंद विभौर होने का तोहफा दिया और आपके स्नेहपूर्ण आशिर्वाद से नगर को कई पुरस्कारोंस ेन वाजाग या।ि शक्षाअ ौरख ेलज गतम ेंउ ल्लेखनीय अपलब्धि हासिल करते हुए उनका 67 वर्ष की उम्र में 28 जून 1999 को निधन हो गया।

वे अपने पीछे अपने दो अनुज भाई रामचंद्र, इन्द्रलाल, पत्नी फूलदेवी,च ारप ुत्रअ रविंद,क मलेश,ल लित,ि नर्मलत थाच ार पुत्रियां प्रभा, नूतन, चित्रा, मीना व पूरा भरा पूरा परिवार व अपने अनेक शिष्यों प्रंशसकों को छोड़ गोलोक निवास कर गए। उनकी स्मृति में उनके पुत्र कमलेश सनाढ्य की अगुवाई में समस्त परिवार की ओर से 2 अक्टूबर गांधी जयंती पर बुजुर्ग खिलाड़ियो, उभरती प्रतिभाओं, समाजसेवियों व साहित्यकारों के सम्मान का आयोजन 2017 से प्रारंभ किया है। उसमें नगर के बुजुर्गो एवं प्रबुद्धजनों का सम्मान किया जाता है और सभी को अपने हाथों से भोजन करवा कर उनकी स्मृतियों और उपलब्धियों को सदा के लिए अमरत्व और यादगारर खनेक ाप्र यासक ियाहै।प रिवारक ेस ंस्कारमयइ स भूमिका की भी नगर में भूरी भूरी प्रंशसा होती है। नगर का हर खेल प्रेमी सदियों तक आपके किस्से अपने बच्चों व युवा खिलाड़ियों को तैयार करते वक्त सुनाता रहेगा। आपका यश राजसमन्द में हॉकी के जादूगर के नाम से अजर अमर रहेगा। जयवर्द्धन पत्रिका में 'माटी का लाल' कॉलम लिखकर मैं भी अपने भावपूर्ण शब्दों से महान शख्सियत को कोटि कोटि नमन करता हूं।

प्रस्तुति
सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली

गणतंत्र दिवस पर समस्त नगरवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

नगर परिषद, राजसमंद

स्वच्छ राजसमन्द

स्वच्छ भारत एक कदम स्वच्छता की ओर

सुन्दर राजसमन्द

● नगर को स्वच्छ रखने में अपना योगदान दें। ● सड़कों पर अतिक्रमण न करें।
● जन्म-मृत्यु एवं विवाह का पंजीयन समय पर करावें।
● पानी बचाओ, बिजली बचाओ, सबको बढ़ाओ। ● वृक्ष लगाओ, हरियाली लाओ।

पार्षदगण :- श्रीमती शारदा कुमावत, नारायणलाल सुथार, श्रीमती रेखा गाडरी, श्रीमती देविका निष्कलंक, विजय जैन, श्रीमती जया माली, उत्तम कावड़िया, राजकुमार पहाड़िया, अशोक टांक, मोहन कुमावत, खुशकमल कुमावत, जगदीश पालीवाल, नन्दकिशोर कुमावत, श्रीमती लक्ष्मी चुण्डावत, शिशुपाल चौधरी, कुलदीप पूर्बिया, राजेश पालीवाल, भुरालाल कुमावत, दीपक शर्मा, श्रीमती ललिता कुमावत, श्रीमती पारस भील, प्रकाश गमेती, हेमन्त गुर्जर, कुशलैन्द्र दाधीच, रोहित पंचोली, श्रीमती राजकुमारी पालीवाल, श्रीमती निलोफर बानु, हेमन्त रजक, श्रीमती सुनिता धोबी, रवि गर्ग, ब्रजेश पालीवाल, हिम्मत मेहता, श्रीमती सीमा खत्री

सुरेश पालीवाल
सभापति
नगर परिषद, राजसमंद

आयुक्त
नगर परिषद, राजसमंद

अर्जुन मेवाड़ा
उप सभापति
नगर परिषद, राजसमंद

नगर परिषद, राजसमन्द

गणतंत्र दिवस की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
रोशनलाल गमेती
सरपंच
श्रीमती बालीदेवी जाट
उपसरपंच
दिनेशपूरी गोस्वामी
ग्राम विकास अधिकारी
समस्त वार्डपंच एवं ग्रामवासी
-: स्वच्छता अभियान हेतु सार्वजनिक अपील :-
▸▸ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ▸▸ कागज, प्लास्टिक की बोतलें, धातु के डिब्बे, कांच आदि अलग-अलग फेंके।
▸▸ सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंके। ▸▸ सार्वजनिक स्थलों पर थूकें नहीं। ▸▸ अपने पालतू जानवरों को सार्वजनिक स्थल पर गन्दगी न फैलाने दें। ▸▸ इमारत की सीढियां, लिफ्ट, बरामदा आदि में गंदगी न फैलाएं। ▸▸ नालियों व सीवरेज को ब्लॉक न करें, न ही प्रशासन की अनुमति के बिना इनमें फेर बदल करें।
ग्राम पंचायत फियावड़ी, पंचायत समिति राजसमंद

vedanta
transforming elements
HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India
हिन्दुस्तान ज़िंक की ओर से
आप सभी को गणतंत्र दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ...
हिन्दुस्तान ज़िंक पर्यावरण के क्षेत्र
में विश्व की #1 खनन कंपनी
by Dow Jones Sustainability Index - 2018

कुरज गांव कनकावली, यह सेजा की धरती, पीर पीड़ा सब हरती

जयवर्द्धन ग्रामयात्रा के तहत इस बार हमारा गांव है कुरज। जिसके पूर्व में छतरियां, पश्चिम में गारियावास, उत्तर में गांव का मुख्य मार्ग है, तो पश्चिम में बनास नदी। कुछ इसी तरह गांव का परिचय कराता साहित्यकार दौलतराम माहेश्वरी का यह छंद-

पूर्व में छतरियां बनी, पश्चिम में गारियावास
उत्तर में तो गेट बना, दक्षिण में बहे बनास।
कुरज गांव कनकावली, नदियां गहरा नीर
पनिहारियां पानी भरें, ओढ़े पचरंग चीर।।
ओढ़े पचरंग चीर, देह पर पहने गहने
लालायित थे लोग, चले आते थे रहने
कहे दौलत कविराय यही सेजा की धरती
जो बनास के तीर, पीर पीड़ा सब हरती।।

जुलाई 2016 में भारी बारिश होने पर जलमग्न हुआ कुरज बस स्टैंड।

कृषि प्रधान सेजा की धरती इस कुरज गांव की बसावट करीब 400 वर्ष पूर्व बताई जाती है। कहा जाता है कि सबसे पहले बड़वाल जाट ने कुरज को बसाया, जिसका शिलालेख आज भी मौजूद है। कहते हैं गांव के बीचोबीच एक तालाब हुआ करता था, जिसके किनारे पर लोग रहते थे। कुरज गांव के नामकरण पर किवदंती है कि उस तालाब पर कुरजां नामक पक्षी बहुतायत में थे, जिनकी वजह से ही गांव का नाम कुरज पड़ गया। एक श्रुति यह भी है कि पहले इस गांव को कंड़ज कहा जाता था, जिसके प्रमाण प्राचीन हस्तलिखित पट्टों, परवानों व शिलालेखों में भी मिलता है। इस गांव की खास बात यह है कि हर जाति, समुदाय का अपना अपना मोहल्ला बना हुआ है।

गांव के प्रबुद्धजन अरुण बोहरा ने बताया कि कुरज में जाट, अहीर, महाजन, मुस्लिम, रेगर, खटीक, ब्राह्मण, वैष्णव, वाल्मिकी, गाडरी, नाई, कुम्हार, सालवी, कुमावत, बैरवा, यादव सहित लगभग सभी जातियों के लोग रहते हैं, मगर धोबी और बंजारा जाति के लोग यहां नहीं है। बताते हैं कि कई बार धोबी व बंजारे बसने के लिए आए, मगर वंशवृद्धि नहीं होने की वजह से वे अन्यत्र चले गए। इस गांव की आबादी करीब 10 हजार है, जिसमें 5800 मतदाता है। अन्यत्र व्यवसाय के चलते महाजनों के ज्यादातर मकान बंद रहते हैं। उसी प्रकार अहीर व गायरी के ज्यादातर युवा भी गुजरात में आइसक्रीम का व्यवसाय करते हैं।

इधर, कुरज के वरिष्ठ साहित्यकार दौलतराम माहेश्वरी ने वर्तमान कुरज की स्थिति को अपने छंद में इस प्रकार बताई है-

आज कुरज कंटकपुरी, नदिया सूखा रेत
पनिहारिया पानी भरन, तरसे पीवल खेत
तरसे पीवल खेत कुएं मोटर पर ताले
नल पर तो अब हाय मकड़िया लटकी जाले
महिलाओं का श्राप भुगते सब नर नारी
साधु और फकीर बने है सब घर बारी।।

कभी खेती से सोना उगाने वाली कुरज की धरती अब पानी की बूंद बूंद को तरसने लगी है। कभी दूर- दूर के लोगों को रोजगार देने वाले कुरज में आज युवा रोजगार के अभाव में घर छोड़ने को मजबूर हो गए हैं। जब राजसमंद भी उदयपुर जिले में था, तब कुरज में उप कृषि उपज मंडी बनाई गई थी, जो करीब 20 बीघा में फैली हुई है। यहां हजारों क्विंटल की तादाद में अनाज इस उप मंडी में खरीदा व बेचा जाता था, मगर बदलते वक्त में राजसमंद जिला बनने के बाद कांकरोली में एक ओर कृषि उपज मंडी आबाद हुई, मगर यहां कुरज की मंडी विरान हो गई। काफी वर्षों तक बंद रहने के बाद हालांकि इस बार राजसमंद विधायक किरण माहेश्वरी के प्रयास से गेहूं की खरीद की गई।

इस गांव के बाजार में करीब 60 से ज्यादा किराणा, खाद्यान्न, कॉस्मेटिक, कपड़ा, रेस्टोरेंट आदि दुकानें है। कुरज के प्रथम सरपंच मंगलसिंह चपलोत थे, जो रेलमगरा पंचायत समिति के पहले प्रधान भी रहे। उन्होंने अपने प्रयास से कुरज में कपास फैक्ट्री खोली, जो उन दिनों न केवल किसानों के लिए सहायक बनी, बल्कि रोजगार का भी प्रमुख साधन बनी। ग्रामवासियों का कहना है कि गांव में 2500 बीघा चरागाह व 1000 बीघा बिलानाम जमीन है, जहां रीको इंडस्ट्रीज विकसित हो सकती है, जिससे क्षेत्रीय लोगों को रोजगार मिल सकता है। इसके अलावा गांव के प्रत्येक समाज के नाम सौ से दो सौ बीघा तक अलग से चरागाह जमीनें भी है, जो मवेशियों की चराई में काम आ रही है।

तहसील नहीं, विद्यालय मांगा

उदयपुर जिले के वक्त कुरज और रेलमगरा ही सबसे बड़े दो कस्बे थे। इस पर तत्कालीन प्रशासन द्वारा ग्रामीणों को ऑफर दिया था कि कुरज को तहसील बनाना है या विद्यालय खुलवाना। तब ग्रामीणों ने सोचा– कहां दाणी, सिपाही और कोर्ट के चक्कर में फंसेंगे। हमें तो विद्यालय ही चाहिए। इसलिए रेलमगरा से भी पहले कुरज में विद्यालय खुला। अंग्रेजी शासनकाल में बने तीन कमरे आज भी इस स्कूल में मौजूद है। इस गांव से होकर रेलमार्ग का भी सर्वे हो चुका है, जो मावली से भीलवाड़ा तक प्रस्तावित था। अंग्रेजों के जमाने में कुरज के मोहनलालजी दाणी का कार्य करते थे।

पंचायत के प्रमुख गांव

मंडपिया खेड़ा, जिसे पृथ्वीराज सुखवाल द्वारा बसाया गया। दूसरा गांव वाडिया, जिसमें माली जाति के लोग निवास करते हैं। कानाखेड़ा, गाडरियावास, कालामाना आदि गांव शामिल है।

गांव की प्रमुख सुविधाएं

राउमावि,र ाबाउमावि,अ ादर्शप्ाथमिकस् वास्थ्यकें द्र,ग्ामस ेवा सहकारी समिति, पशु औषधालय, आईसीआईसीआई बैंक, डाकघर, पुलिस चौकी, समाज कल्याण विभाग का छात्रावास, गांव में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा संचालित नल योजना, जिसके तहत हर घर में नल सुविधा उपलब्ध है। यहां 1975 से विभागीय जल व्यवस्था है।

भामाशाहों का अहम योगदान

कुरज गांव के विकास में स्थानीय भामाशाहों का काफी अहम योगदान रहा है। जनसहभागिता योजना का सर्वाधिक लाभ इसी गांव ने उठाया, जिसकी बदौलत यहां विद्यालय से लेकर स्वास्थ्य केंद्र, कृषि उपज मंडी, यात्री प्रतिक्षालय तक हर कार्य में भामाशाह द्वारा अग्रिम पैसा दिया गया। गांव के प्रभुलाल दौलतमल मंडावेरा, सेठ बंशीलाल नन्दलाल न्याति व रंगलाल लावटी आदि का खास योगदान रहा है। जनसहयोग पर ग्राम पंचायत कुरज ने भी कंधे से कंधा मिलाते हुए बेहतर विकास कराया।

मौजूदा सरपंच का भी जनसहभागिता पर जोर

जन सहभागिता से श्मशान घाट, आम रास्तो पर सड़क निर्माण, रोड लाइट की बेहतर सुविधा, चरागाह भूमि से कंटीले जाड़ से मुक्त कर मवेशियों के लिए उपयुक्त बनाना, पंचफल योजना, खेल मैदान में भराव कर उपयुक्त बनाना, नालियों का निर्माण, सामुदायिक भवनों का निर्माण, तालाब का सौंदर्यीकरण व गौ घाट निर्माण, पेयजल के लिए हैडपम्प व मवेशियों के लिए प्याऊ का निर्माण, मुख्यमंत्री स्वालबन योजना के तहत देमंड बावजी से बनास नदी तक नहर निर्माण आदि प्रमुख कार्य हुए हैं। वर्तमान सरपंच अनिल चौधरी ने भी कुरज पंचायत क्षेत्र में जनसहभागिता से अधिकाधिक विकार्य कार्य कराने पर जोर दिया है। उनका मानना है कि विकास कार्यों में ग्रामवासियों का पैसा लगने से उनमें अपनत्व का भाव विकसित होता है, जो कार्य की गुणवत्ता व जवाबदेही भी तय होती है।

गांव की शख्सियत

मोहनलालजी दाणी ने प्रजामंडल में कार्य किया था। 1972 में कुरज के नानालाल वीरवाल राजसमंद के विधायक बने, जो उस वक्त प्रदेश के खनिज मंत्री रहे थे। इसी तरह मंगलसिंह चपलोत गांव के प्रथम सरपंच और रेलमगरा के पहले प्रधान रह चुके हैं। इसके अलावा करीब 50 वर्ष पहले जयशंकर राजोरा जिला पुलिस अधीक्षक रह चुके हैं, जिनका दुर्घटना में निधन हो गया। गांव के दो चिकित्सक डॉ. गोपाल राजोरा, डॉ. विशाल लावटी के अलावा 400 से ज्यादा लोग सरकारी सेवा में है। विरेन्द्रसिंह चपलोत अमेरिका में इंजीनियर है।

कुरज में रूके थे दीवाना शाह

चित्तौड़गढ़ जिले के कपासन की प्रसिद्ध दरगाह के सूफी संत दीवाना शाह करीब 12 वर्षों तक कुरज में रहे। बाद में यहां किसी कारण से पलायन कर गए, जो कपासन में स्थायी रूप से रहे। कुरज में आज भी दरगाह मौजूद है, जहां मुस्लिम समुदाय के साथ अन्य धर्मावलंबियों की भी आस्था है।

प्रमुख पर्यटन स्थल

समेलिया महादेव मंदिर है, जिसे त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। यहां बनास व दो अन्य सहायक नदियों का मिलन है।

नेत्रहीनों को दिखाई दुनिया

कुरज के जगदीश जागेटिया जो बालासिनोर में व्यवसायरत है। लॉन्यस क्लब के तत्वावधान में कुरज में प्रतिवर्ष नेत्र ज्योति शिविर आयोजित किया जाता है, जिसमें प्रतिवर्ष करीब 250 लोगों के आंखों का ऑपरेशन होता है। जांच, उपचार, दवा, चश्मे, खाने-पीने तक का सारा खर्च इन्हीं के द्वारा उठाया जाता है।

इतिहास के झरोखे से

इस गांव का महाराणा से सीधा संबंध था। कुरज गांव के अतीत के साथ गौरव की एक बात यह जुड़ी है कि 22 अक्टूबर 1680 ई. को महाराणा राजसिंह के उत्तराधिकारी महाराणा जयसिंह का राज्याभिषेक इसी गांव में हुआ था और जयसिंह ने एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील जयसमंद का निर्माण कराया था। गांव काज ोि वकसितरू वरूपज ोअ ार्जि दखाईप ड़ताह ै,उ समें सरकार की मदद से कई ज्यादा जनसहयोग से विकास हुआ है। बनास नदी में पानी की आवक घटने के साथ ही यहां की उपजाऊ जमीन अब बंजर होने लगी है। ग्रामीणों के अनुसार नन्दसमंद बांध बनने के बाद से ही बनास में पानी की कमी आ गई। इसका प्रभाव यह पड़ा कि कुओं का जल स्तर काफी गिर गया है। बताया गया कि दो दशक पहले तक यहां वर्ष में तीन फसलें होती थी। एक खेत खाली नहीं मिलता था। जमीन को थोड़ा सा खोदते ही पानी निकल आता था, लेकिन 200 से 300 फीट तक खोदने के बाद भी पर्याप्त पानी नहीं मिलता है। कपास की खेती घटकर अब नाम मात्र की रह गई है और लोगों को अब रोजी रोटी के लिए मजदूरी आदि की ओर उन्मुख होना पड़ रहा है।

'स' से साम्प्रदायिकता

अभी पिछले दिनों स्कूल में होने वाली प्रार्थना के विरोध में याचिका दायर हुई। कहा गया कि ये प्रार्थनाएं साम्प्रदायिक है और इनकी वजह से भारत के धर्म निरपेक्ष राष्ट्र होने पर सवाल खड़ा होता है। अत: ये प्राथनाएं बन्द होनी चाहिए। ये बातें सुनकर मुझे पर्सनली काफी दु:ख हुआ। मेरा और मेरे जैसे करोड़ों बच्चों का बचपन सुबह सुबह होने वाली इन प्रार्थनाओं में बीता। 'हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें, दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें...', 'इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर होना...' ये वो प्रार्थनाएं थी, जो हम रोज गाया करते थे।

गाहे बगाहे दिन में भी गुनगुनाते, पर कभी मंदिर, मस्जिद वाला भाव मन मे नहीं आया। रास्ते से गुजरते वक्त बीच में चाहे मंदिर होता या मस्जिद, सर दोनों जगह झुकता। पता नहीं इन नेताओं और वामपंथियों को इन प्रार्थनाओं में सांप्रदायिकता कहां से नजर आ गई। इन पढ़े-लिखें इंटेलेक्चुअल वामियों के बीच मैं स्वयं को अनपढ़ महसूस करता हूं। मुझे आज भी समझ नहीं आता कि प्रार्थनाएं साम्प्रदायिकता को कैसे बढ़ा सकती है, पर तब मुझे एक पुराना किस्सा याद आता है और मुझे मेरे सारे सवालों के जवाब मिल जाते हैं।

किस्सा कुछ यूं था, सन 2001 के आसपास यूपी में मायावती जी मुख्यमंत्री थी। बड़ी दबंगई के साथ उन्होंने शासन चलाया। फिर 2003 में चुनाव हुए। इस बार आदणीय डॉक्टर मुल्लायम सिंहजी (ये किस चीज के डॉक्टर है, उस बारे में खोजबीन जारी है) मुखमंती बने। मुल्लायमजी शुरू से खुद को अल्पसंख्यक समाज का रहनुमा मानते थे और शिक्षण प्रणाली को बेहतर बनाने पर इनका काफी जोर था। इसलिए उस समय चल रही सेक्सिक गतिविधियों, माफ करिए, शैक्षिक गतिविधियों को जांचने और उसे बेहतर बनाने के लिए इन्होंने कक्षा पहली की हिन्दी की किताब मंगवाई।

उस समय बच्चों को वर्णमाला सीखाने के लिए 'क' से कमल 'ख' से खरगोश, 'ग' से गणेश पढ़ाया जाता था। मुलायम जी को 'ग' से गणेश पर आपत्ति हो गई। बोले कि 'गणेश' शब्द साम्प्रदायिक है। इससे धार्मिक भावना आहत होती है, तो सेक्सिक 'सॉरी' शैक्षिक प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए मुल्लायमजी ने अमूल्य सुझाव दिया और शिक्षा विभाग में उसे तुरंत लागू किया गया। सारी पुस्तकें फिर से मंगवाकर 12 करोड़ का खर्च करके हिंदी की नई पाठ्यपुस्तकें भेजी गई। इस पुस्तक में ऐतिहासिक बदलाव हुआ। 'ग' से 'गणेश' की जगह 'ग' से 'गधा' किया गया और स्कूलों में 'ग' से गणेश की जगह 'ग' से गधा पढ़ाया जाने लगा। तब जाकर लोगों को समझ आया कि 'गणेश' साम्प्रदायिक है और 'गधा' धर्मनिरपेक्ष है। आज भी जब इन तथाकथित धर्मनिरपेक्षों को देखता हूं, तो मुल्लायमजी का कथन याद आता है कि गधा धर्मनिरपेक्ष होता है। या क्या पता चले चोला ओढ़े धर्मनिरपेक्ष गधे हो...।

दीपक जैन 'चोरड़िया'
मार्बल उद्यमी, कांकरोली

गणतंत्र दिवस की
समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक
बधाई एवं शुभकामनाएं

उपाध्यक्ष एवं
समस्त संचालक मंडल सदस्य
सहकारिता से जुड़े, शोषण से बचे, असलीखाद-बीज व कम ब्याज दर पर ऋण
सहकार योजना का लाभ उठावें, छुट का लाभ लें।
ग्राम सेवा सहकारी समिति कुरज
तहसील रेलमगरा, जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन पत्रिका से मेरा भावनात्मक जुड़ाव

मैं जैसे ही राजसमंद पहुंची, जयवर्द्धन मेरे पास पहुंची। अब मेरा इस मासिक पत्रिका के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव है। मैं मूलत: जोधपुर की हूं और मेरी शिक्षा के क्षेत्र में सीखने की यात्रा लगभग 19 वर्षों से है। मैं हर महीने जयवर्द्धन को अलग- अलग रंग-रूप व प्रेरकअ ालेखोंके ि लएब धाईद ेतीह ूं।स फलताक ीक हानियां पाठकों के लिए बहुत प्रेरणादायक है। मुझे यकीन है कि अक्टूबर 2018 के अंक में नगरपरिषद सभापति सुरेश पालीवाल का साक्षात्कार कई लोगों को प्रेरित करेगा। मेरा सुझाव है कि इस पत्रिका में जागरूकता का कॉलम भी जोड़ा जाए, ताकि पाठकों तक समस्या के समाधान का मार्ग प्रशस्त हो। आज के समाज में आमजन कैसे बदलाव देखना चाहते हैं। हम हर महीने एक मुद्दा चुन सकते हैं और उस पर लिख सकते हैं। अंग्रेजी भाषा का एक अतिरिक्त पृष्ठ भी एक शानदार कदम हो सकता है। मुझे यह खुशी होगी कि मैं किसी भी तरीके से इस पत्रिका के लिए योगदान दे सकूं।

मनीषा लश्करी
प्रधानाचार्य स्मार्ट स्टडी इंटरनेशनल स्कूल, करजियाघाटी, नाथद्वारा 95713-73401

साहित्य की हर विधा का समावेश

राजसमन्द जलेक ीख ुशबूस मेटेज यवर्द्धनप त्रिकाके ज ुलाई 2018 से विभिन्न अंक मुझे विज्ञान समिति महासचिव श्री प्रकाश तातेड़ के माध्यम से प्राप्त हुए। अवलोकन के बाद लगा कि पत्रिका समाज व साहित्य की वास्तविक सेवा कर रही है। साहित्य की प्रत्येक विधा का समावेश एवं आंचलिक लेखकों का उत्साहवर्द्धन जैसी विशेषताएं आकर्षित करती है। पत्रिका की अधिकांश सामग्री उद्देश्यपरक, रोचक एवं पठनीय है।

डॉ. के.एल. कोठारी
संस्थापक विज्ञान समिति अशोकनगर उदयपुर
पूर्व डीन राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर

जयवर्द्धन का हर कॉलम प्रेरक और प्रेरणास्पद

मेवाड़ी भाषा को तरजीह देने के साथ व्यंग्य, चिंतन, मंथन, तीखी मिर्ची, माटी का लाल, गुमनाम शख्सियत, मेरे गांव के लोग, आध्यात्म, मेवाड़ी चौपाल व संस्मरण जैसे हर कॉलम प्रेरक है। मैंने एक बार पत्रिका पढ़ी, तो दूसरी स्वत: फिर पढ़ने की ललक जगी और अक्सर अगले अंक का इंतजार रहा कि मुझे अगला अंक कब मिले और मैं पढ़ूं। स्थानीय स्तर पर इस तरह की विधा के साथ समग्रता यह पत्रिका अपने आप में अनूठी है। समाज के हर वर्ग तक पहुंचने और टेंशन मुक्त जीने के लिए प्रेरित करती है यह पत्रिका। मेरा स्थानीय मेवाड़ी भाषा के कॉलम बढ़ाने का सुझाव है।

रमेश सुहालका
शिक्षाविद् एवं साहित्यकार जबलपुर

आइये महान ज्योतिषी बने

ऐषणाओं की प्रतिमूर्ति बनते जा रहे मनुष्य में भविष्य जानने की लालसा जाने कितने युगों से रही है। ऐसे में ज्योतिष का प्रभाव दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। आजकल ज्योतिष के नाम पर जानकारों की बाढ़ आ गई है। जगह- जगह कुकुरमुत्तों की तरह उग आए हैं ज्योतिषी। इसके साथ ही हस्तरेखाविद् बनने का शौक भी हर कहीं परवान चढ़ रहा है।

इनकी अनेक किस्में हैं, कोई घर में ही ज्योतिष की दुकान चलाकर अपना भविष्य संवारने में लगा है, तो कोई ज्योतिष के नाम पर संस्था और ट्रैनिंग सेंटर खोलकर। इसके अलावा कई कई जमातें फुटपाथों से लेकर राजपथों तक नवग्रहों का मायाजाल फैलाने में जुटे हैं। ज्योतिष में जहां सच्चाई है, वहीं गप्पेअ ैरक यास,म नोविज्ञानअ ादि का भी उतना ही स्थान है। यह धंधा ऐसा है कि हींग लगे न फिटकरी। जहां चाहो, वहां डेरा जमाते जाओ। भविष्य जानने और रातों- रात लखपति, करोड़पति बनने वाले भूखे लोगों की भीड़ भारत से ज्यादा और कहां होगी ?

आप भी पढ़ लीजिये छोटी- मोटी ज्योतिष की पुस्तक और आजमा लीजिए अपना भाग्य। फिर यह धंधा अकेला ज्योतिष से ही जुड़ा नहीं है। इसमें जड़ी-बूटियां, नग-रत्न, रूद्राक्ष, ताबीज, कड़े, अंगूठी और जाने कितनी सामग्री बेचने के आप ब्राण्ड एम्बेसेडर बन सकते हैं। फिर क्या है। सबसे सस्ता, सहज एवं सर्वसुलभ धंधा है ज्योतिष।

उठा लीजिए कुछ किताबें, पहन लीजिये रूद्राक्ष या और रत्नों की माला, रंग- बिरंगे ताबीज और डोरे बांध लीजिये हाथों में, अलग- अलग रंगों के तिलक भाल पर लगाइये और चल पढ़िए इस सुनहरेस फरक ोिअ ेर ाि फरक ैनर ेकस कताह ैअ ापको ि सद्ध हस्तरेखाविद् और ज्योतिषी बनने से। यहां कुछ टिप्स दी जा रही है, जिन्हें अपनाकर आप भी चला सकते हैं अपना सिक्का और पा सकते हैं शौहरत।

➡ जब भी कोई अपनी समस्या/ जिज्ञासा/ प्रश्न लेकर आपके पास आए। उसकी जन्म कुण्डली, हाथ देखकर चंद क्षणों तक आंखे बंद कर इस तरह बुदबुदाएं कि सामने वाले को लगे कि आप कोई सिद्धि प्राप्त ज्योतिषी हैं।

➡ इसके बाद गंभीर होकर देखिए। कुण्डली हो तो एक बार उस पर आंखें गढ़ाते हुए पूरी कुण्डली को देख लीजिये। हाथ को उलट- पलट कर देखिएं और चेहरे के गांभीर्य को बरकरार रखते हुए मुख मुद्राएं बदलते रहें।

➡ जन्म कुण्डली के विभिन्न पक्षों/ विविध हस्तरेखाओं को ध्यान से पढ़ते हुए आप यह निष्कर्ष क्रमश: धीरे- धीरे बोलते जाएं।

➡ आपका जीवन संघर्षों से घिरा रहा है। समस्याएं किसी न किसी रूप में आपके सामने आती रहती हैं।

➡ आपके मन में लोगों की भलाई का जज्बा है, लेकिन आपको यश (जस) प्राप्त नहीं होता। आप जिसकी भलाई करते हैं, वही काम निकल जाने के बाद आपकी बुराई करने लग जाते हैं।

➡ आपके पास पैसा ठहरता नहीं है। जितना आता है, कहां चला जाता है, पता ही नहीं चलता है। जरूरत के वक्त कहीं से भी पैसों का बन्दोबस्त हो ही जाता है।

➡ स्वास्थ्य का पाया कमजोर तो नहीं दिखता, मगर छोटी- मोटी शारीरिक तकलीफें जरूर आती रहती हैं।

- सामने वाले के चेहरे को पढ़ते हुए कहें। आपके मन में सदैव चिंताए/ आशंकाएं बनी रहती हैं, मगर इनसे घबराइये नहीं। रोजाना 10-15 मिनट तक जिसे भी मानते हैं, उपासना करें।
- आप जल्दी- जल्दी सब कुछ पाने को उतावले रहते हैं, पर ऐसा नहीं हो पाता। आप सोचते कुछ हैं और हो कुछ और जाता है। हमेशा थोड़ा सा धैर्य रखिएं।
- आपके घर- परिवार वाले आपसे अन्दर ही अन्दर ईर्ष्या भी करते हैं। उनके लिए आप बहुत कुछ करते हैं, पर वे है कि आपको मानते ही नहीं।
- हाथ को उलट- पलट कर पूर्ण तनाव व गांभीर्य के भाव लाकर कहिए, जीवन में दो-तीन मौके घात (मृत्यु सी स्थिति) के आए, लेकिन भगवान की मेहरबानी या भाग्य ही कहिए कि आप बच गए। अब रोजाना किसी मंत्र जप करें, इससे अनिष्ट टल जाएगा।
- पूरी मेहनत करने के बाद भी इसका पूरा फायदा नहीं मिलता। पितर दोष की शांति जरूरी है। पितरों के दोष की शांति जरूरी है। पितरों को प्रसन्न करना चाहिए, ताकि बाधाएं दूर हो सके।

आप देखें कि सामने वाला भावुक है। हां- हां कर सर हिलाता है और अब आपके चक्कर में आ गया है, तो आप उसे भयभीत करते हुए सुनहरे भविष्य के सब्जबाग दिखाते हुए इस तरह आशान्वित करें- व्यवसाय में तरक्की होगी/ नौकरी में प्रमोशन होगा। बढ़िया नौकरी के चांस आ रहे हैं।

- मकान बनेगा खुद का। शादी के योग आ रहे हैं। थोड़ी मंगल की शांति करा लें।
- कर्ज से आप परेशान है। फिक्र न करें। कुछ दिन बाद धन लाभ के योग बन रहे हैं।
- आपमें ई हुनर छिपे हुए, जिस पर ध्यान दें और विकसित करें।
- आपके दाम्पत्य जीवन में कहासुनी होती रहती है। हालांकि इसके बावजूद प्रेमभाव बना रहता है। बच्चे आपका कहा नहीं मानते।
- घर की बनावट ऐसी है कि वास्तुदोष लगता है।

भविष्य जानने वाले व्यक्ति पर आपकी बातों का जब पूरा प्रभाव दिखने लगे और उसका चेहरा भयभीत लगे, तब आप सान्त्वना के भाव लाते हुए उसे आशा भरा मार्ग दिखाएं। इसे निम्न टिप्स दे-

- पीपल पर कच्चा दूध मिला पानी चढ़ाएं। शिवलिंग पर कच्चा दूध मिला पानी चढ़ाएं।
- पांच गुलाब फूल शिवजी और सूर्य भगवान को जल चढ़ाए।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- चींटियों को सत्तू (गुड़, शक्कर, शुद्ध घी में भुना आटा) डालें।
- हनुमान चालीसा/ रामरक्षा स्तोत्र/ गायत्री मंत्र/ दुर्गापाठ आदि करें।
- अमुक रत्न या अमुक पौधे की जड़ी-बूटी गले या हाथ में बांधे।
- अमुक भगवान की मूर्ति के समक्ष श्रीफल वधेरे।
- चिड़िया को साल/ चावल व कबूतरों का दाना डालें।
- गाय को घास/ चारा, कुत्ते को रोटी डालें।
- स्वास्थ्य रक्षा के लिए रात को अपने शरीर पर से सात बार रोटी उतार कर चौराहे पर जाकर इसे चुपचाप फेंक आएं। न जाते समय बोलें न लौटते समय।
- गणेशजी पर दुर्वा/ हनुमानजी पर तिल्ली का तेल चढ़ाए। किसी डिब्बी में तेल भर उसमें मुंह की छाया देख कर दान कर दें।
- आधी रात को चुपचाप दीपक चौराहे पर रख आएं।
- सूर्य की प्रसन्नता और आश्चर्य पाने के लिए रविवार को पान खाएं व खिलाएं।
- सुबह, शाम कुत्तों को जलेबी, गुड़ या मीठी सेव खिलाएं।
- शारीरिक व्याधि शमन के लिए अपने शरीर से गुड़ या मोतीचूर के लड्डू सात बार उतारकर कुत्तों या गायों को खिला दें।
- शनिवार को उड़द का दही बड़ा प्रसाद के रूप में शाम ढलने के बाद लें। कैर- सांगरी की सब्जी लें शाम को 7 से 9 बजे के बीच।
- राहु की शांति के लिए एक काले कपड़े में एक- दो किलो कोयले लें और उसमें तिल्ली का 50 ग्राम तेल चढ़ा कर इसे बुधवार शाम नदी- नाले में बहते पानी में बहा दें।

अपने पास आने वालों को इसी तरह का कोई प्रयोग बताते रहें। एक न एक दिन आपके चेलों को फायदा जरूर होगा। आपके लिए सिक्के का हर पहलू फायदा देने वाला है। उनको तो फायदा हो या न हो, आपकी जेब तो उसी समय भरने लगेगी।

डॉ. दीपक आचार्य
उप निदेशक
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग राजसमंद

शक्ति स्पोर्ट्स
पर खेलकूद सामग्री के साथ
माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्कूलों के
पुस्तकालय की किताबें
उचित मूल्य पर उपलब्ध।
शास्त्री मार्केट, कांकरोली
मोबाइल : 94144-73275, 94142-39648

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise With Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस को दें बुलन्दियां सस्ती दरों पर जयवर्द्धन पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

गाओ ना

रुको, कहां जा रहे हो,
मन करता है रख लूं तुम्हें उस बच्चे की तरह
जिसे मैं हर रोज अपने पास रखती हूं
रुक क्यूं गए, क्यूं रुक गए
तुम्हारे लफ्ज जो किसी की यादों को बयां करते हैं,
गाओ ना, गाते जाओ।
जब तुम्हारे लफ्ज जो कहते हैं कि कैसे तुम मुझे देखते हो,
निहारते हो, जो तोहफे तुमने मुझे दिए,
उनमें यही तो बात और जज्बात है। पर कैसे तुम्हें रख लूं,
मेरी नजरों से भी देखो ना, तुम जज्बात को, उस ख्याल को,
मैं तो सोचती ही रह गई
ये कि कैसे अब तुम मेरी जुल्फो को मेरे चेहरे से हटाओगे,
कैसे तुम्हारी सांसे मेरे चेहरे को छूकर चली जाएगी
यकीन मानो ये सब तब हुआ
जब तुम मुझे देख के गाते जा रहे थे।
कभी भी अकेला नहीं छोड़ते तुम मुझे,
चाय भी पीती हूं तो तुम्हारे नाम से मीठी लगती है।
जब मैं खिड़की से बाहर बारिश देखती हूं
तो बारिश की बूंदे और मेरी जुल्फे मेरे चेहरे पे आ जाती है,
मैं इस इंतजार में रहती हूं,
कोई (तुम) इसे आके अपनी सांसो से और भी नमकीन कर दें,
फिर धीरे-धीरे अपने हाथों से जुल्फो को हटाए और मेरी आंखों को
देख के उसे चूमे,
इसीलिए कह रही हूं, गाओ ना, बस गाते जाओ, गाते जाओ।

विजय रेखा जांगीड़
राजसमंद, हाल मुंबई
मो. 98298-36522

जन-गण-मन

जन-गण-मन
विश्व धरा पर
लोकतंत्र का
परचम हम
फहराते हैं।
विश्व...
लाखों नहीं
करोड़ो स्वर से
जन-गण-मन
हम गाते हैं।
विश्व...
संविधान के
प्रति समर्पण
का प्रण, हम
दोहराते है।
विश्व...
पंचशील है,
मंत्र हमारा
सत्य, अहिंसा
और त्याग का
मूर्त रुप दर्शाते हैं।
विश्व...
जाति, भाषा
और मजहब से ऊपर
उठ हम
एक्य भाव दर्शाते हैं।
विश्व...
एक देश हैं
एक ही झण्डा
घर घर हम
फहराते हैं।
विश्व...
प्रगति पथ पर
देश बढ़ रहा
वीरों की कुर्बानी से
स्वर्णिमय इतिहास की गाथा
कोटी कण्ठ से गाते हैं।
विश्व...
सुदृढ़ शासन
उन्नत खेती
गंगा जमुनी संस्कृति
की रक्षा का
संकल्प हम
दोहराते हैं।
विश्व...
ईद-दिवाली
मोहर्रम होली
पर मिलकर, 'स्नेहिल'
समरसता बरसाते हैं।
विश्व धरा पर
लोकतंत्र का
परचम हम
फहराते हैं।

डॉ. एम डी कनेरिया
नाथद्वारा

याद तुम्हारी

याद तुम्हारी
हर मौसम के चेहरे पर
एक अजीब सी खूबसुरती
दे जाती है।
फूलों से उड़ती खुशबू
कांटों में उलझती यादें
फसलों को हिलाती हवा
और समन्दर में आती
लहरें
बस तुम्हारा ही गीत
रचाती है
याद तुम्हारी
हर मौसम के चेहरे पर
एक अजीब सी खूबसुरती
दे जाती है।
पहाड़ों की चोटियों पर
दूर गिरते झरनों की
आवाजें
हंसों की उड़ती कतारें
और बादलों की
गढ़गढ़ाहट
बस तुम्हारा ही पता
बताती है
याद तुम्हारी
हर मौसम के चेहरे पर
एक अजीब सी खूबसुरती
दे जाती है ।
चांदनी की बीछी चादर
और उस पर
पेड़ों के सायों के पेबन्द
सन्नाटों में डूबी रातें
और बहती नदियों की
कल-कल
कल्पना में तुमसे
मिलाती है
याद तुम्हारी
हर मौसम के चेहरे पर
एक अजीब सी खूबसुरती
दे जाती है।

अफ़जल खां अफ़जल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम–श्री/श्रीमती..

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई–मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

जयवर्द्धन के विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुनः निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

आम आदमी की पीड़ा को रेखांकित करती कविताएं : कमर मेवाड़ी

'शब्द स्वर' श्री राधेश्याम सरावगी 'मसूदिया' का प्रथम कविता संग्रह है। इसमें उनकी 91 कविताएं है। अधिकांश कविताएं कवि के हृदय की छपटाहट को बड़ी तीव्रता से प्रकट करती है।

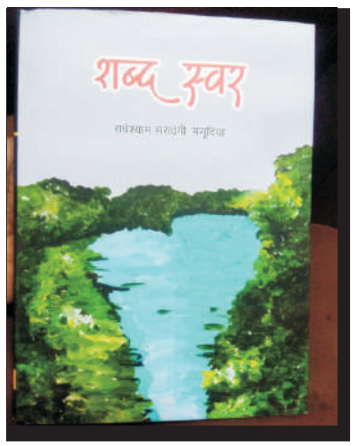

राधेश्याम सरावगी प्रेम और सौन्दर्य के कवि है। उनकी कविताएं जिन्दगी को एक नए अन्दाज में जीने का संदेश देती है। यही कारण है कि उनकी अनेक कविताएं सरिता, मुक्ता, मेरी सहेली, सरस सलिल जैसी व्यावसायिक रंगीन पत्रिकाओं और अन्य दैनिक पत्रों में बड़े सम्मान के साथ प्रकाशित होती रही है और आज भी प्रकाशित हो रही है। मेरा अपना विचार है कि हमारे राजस्थान में उनके कद के कवि-गीतकार अनेक मिल जाएंगे, मगर उनके जैसा शायद ही मिले।

वर्तमान सामाजिक जीवन विषमताओं व विसंगतियों की विभीषिका है। अन्याय, अत्याचार, अनाचार व भ्रष्टाचार का सर्वत्र बोलबाला है। लगता है समूचा देश अंधकार के महासागर में डुबकियां लगा रहा है। आज का आदमी भटक कर दिग्भ्रमित हो रहा है। कविता ही वह शक्ति है, जो आदमी को इस बियाबान जंगल के अंधकार से बाहर निकाल कर प्रकाश से परिचित कराती है। 'शब्द स्वर' शीर्षक कविता में कवि शब्द की शक्ति को रेखांकित करते हुए कहा है-

शब्द अभिव्यक्ति है भावों की,
विचारों की, संवेदनाओं की।
एक शब्द जहर उगलता है,
दूसरा वही शब्द
मिठास भी घोलता है...।

उपरोक्त कविता में कवि शब्द की महिमा को अभिव्यक्त करतेह ुएउ सेप रमात्माके ि संहासनत कप हुंचाद`ताह` ्रक वि मानवीय संस्कृति के नष्ट होने पर दुखी है। संग्रह की पहली ही कविता 'अन्तस की पीड़ा' में वह कहता है-

उमरयाफ्ता भाव शून्य
विवश आंखे
बेबस ओ खामोश
धुमिल दृष्टि
नि:शब्द देखती
मोबाइल, टीवी, कम्प्यूटर, ई-मेल
न जाने कैसी-कैसी संस्कृति
जिससे लुप्त होती मानवीय संस्कृति...।

कवि पाश्चात्य विषैली और लक्ष्यहीन इच्छाओं से परे एक मंगलमय प्रभात की कल्पना करता है। टूटते परिवारों को और मानव से मानव को जोड़ने की पहल करता है, ताकि समाज में व्याप्त प्रदूषण समाप्त किया जा सके। आम आदमी की दुर्दशा पर कवि ने टॉप सुरक्षा कविता में दर्द भरे उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किए हैं-

आम आदमी की होती नहीं सुरक्षा
डकैतों, आतंकियों की होती टॉप सुरक्षा...।

कवि जानता है कि खतरनाक अपराधी काल कोठारी में भी मस्ती की जिन्दगी जीते हैं। उन पर लाखों- करोड़ों रुपए खर्च होते हैं और देश का आम आदमी गरीबी की चक्की में पिस कर अभाव तथा बेबसी की जिन्दगी जीते हुए एक दिन मौत के आगोश में गहरी नींद सो जाता है। 'जिन्दगी बोझ हो गई' कविता में वर्तमान राजनीतिक हालात पर कटाक्ष किया।

वर्तमान समय में आम आदमी की जिन्दगी नर्क बन गई है। वह रोटी, कपड़ा और मकान के संघर्ष में अस्तित्वहीन हो गया है। बेटी पर जुल्म कविता में कवि ने बड़े बेबाक अंदाज में लिखा है कि बेटियों को कोख में ही मार देने का चलन इन दिनों काफी तेज हुआ है, जो इन्सानियत को शर्मसार कर देता है। यही नहीं माताएं भी कभी कभी परिवार के दरिन्दों के साथ खड़ी दिखाई देती है, जो बेटियों के अस्तित्व को समाप्त करने पर तुला है। वक कहना है-

यहां तुम्हारे अस्तित्व को
मिटाने वालों की भरमार है
मौत के आगोश में सुलाने वाले
दरिन्दे/हत्यारे/ घिनौने कृत्य करने वाले
खड़े हर मोड़ पर
न बची उनमें शर्मो हया/ तेरे लिए दया...।

वास्तव में यह बेटियों, बहनों और महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय और अत्याचार की वास्तविक तस्वीर है। हम प्रत्येक दिन समाचार पत्रों में इन दरिन्दों की काली करतूतों के समाचार पढ़ कर दहल जाते हैं। देश में सख्त कानून के बन जाने के बाद भी महिलाओं के साथ हो रहे जघन्य अपराधों में कमी नहीं आई है। यह एक ज्वलंत एवं विचारणीय मुद्दा है, जिस पर हमें गम्भीरता से निर्णय लेने की जरूरत है।

'शब्द स्वर' के रचनाकार ने जहां जवानी की दस्तक, प्रीत की बारिश, लाइन मारते, अदाएं अदब की, प्यार तेरा, जवानी मचलती है, प्यार के दीप, जिन्दगी तृप्त लगे, तुम आओ... जैसी प्रेम में पगी दो दर्जन के लगभग कविताएं कवि को आशिक मिजाज साबित करती है, लेकिन हकीकत में ऐसा कतई नहीं है।

संग्रह में कवि ने अनेक विषयों जैसे साम्प्रदायिक सौहार्द्र, दरकते रिश्ते, भाईचारा, धर्म, समाज और राष्ट्र, राजनीति, भूख महंगाई की मार, शराब, भ्रष्टाचार जैसे अनेक मुद्दों पर अपनी धारदार कलम चलाई है और एक जिम्मेदार कलमकार होने का प्रमाण पेश किया है। आज वोटों की राजनीति ने देश के कर्णधारों को कितना गैर जिम्मेदार और मनुष्य विरोधी बना दिया है। उसका कवि ने संग्रह में प्रकाशितर ाजनीतिश ीर्षकक विताम`ंब ड़ेह ीब`ाबाकअ ंदाजम`ं पर्दाफाश किया है। कविता के दो अंश प्रस्तुत है– (1)

मजहब के नाम पर
जनता को आपस में लड़ाओ
हिन्दू को मुस्लिम से
मुस्लिम को हिन्दू से लड़ाओ...।

(2)

आतंक–दहशत के नाम
बेगुनाहों का खून बहाओ
मस्जिद के सामने सुअर मरवाओ
मन्दिर के सामने गाय मरवाओ...।

'शब्द स्वर' के रचनाकार राधेश्याम सरावगी ने यह पुस्तक अपने माता-पिता को समर्पित की है और पुस्तक के अंत में मां शीर्षकसे तीन सशक्त कविताएं प्रकाशित की है, जो उनके मां के प्रति प्रगाढ़ स्नेह, प्रेम और श्रद्धा को उजागर करती है। वर्तमान पीढ़ी जहां मां को वृद्धाश्रम में भेजकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो रही है। उसके बरक्स कवि के हृदय में मां की स्मृतियों को कलम द्वारा संजोने का कार्य स्वयं की मां ही नहीं, बल्कि दुनिया की प्रत्येक मां के प्रति एक जबरदस्त आदरांजलि है।

मैं इस संग्रह के प्रकाशन पर कवि को साधुवाद अर्पित करते हुए यह कामना करता हूं कि उनका अगला कविता संग्रह भी पाठकों के हाथों में शीघ्र पहुंचेगा।

कमर मेवाड़ी
वरिष्ठ साहित्यकार कांकरोली
प्रकाशक : समर प्रकाशन जयपुर, मूल्य 250 रुपए, प्रथम संस्करण 2018

बुखारी लाल

मेरी फेसबुक फ्रेंड लिस्ट में एक सज्जन हैं, जिनको मेरी तभी याद आएगी, जब कोई त्योहार, पर्व या फिर फर्स्ट जनवरी, फर्स्ट अप्रैल, पच्चीस दिसंबर जैसे विशेष अवसर होते हैं। वे ऐसे अवसरों से एक दिन पहले अपने ज्ञान के पिटारे से एक अनमोल रत्न निकालकर मेरे मैसेंजर बॉक्स की झोली में डालकर कृतार्थ कर देते हैं। उनकी एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि इन स्पेशल दिनों में उनके अंदर कुंभकर्णी निद्रालीन देशीपन का भारी भरकम जिन्न जाग्रत होता है और वे उपदेशी गोले दनादन दागने लगते हैं। वैसे तो मैं उनकी प्रोफाइल में ताकझांक बहुत कम करता हूं, पर ऐसे मौकों पर एक नज़र डालने से बिल्कुल नहीं चूकता हूं। क्योंकि उस समय उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ होकर मन को कूदने के लिए विवश करती है। कोई व्यक्ति जब अपने को शिक्षित दिखाता है, तो उसकी भाषा अंग्रेजीनिष्ठ हो जाती है और वहीं जब वह उपदेशक होता है तो उसकी भाषा तत्सम प्रधान हो जाती है। यह वाणी अम्मा की देन है या मानवीय गुणों का प्रभाव है? समझ से परे है।

दीपावली की पूर्व संध्या पर उनका संदेश आएगा– 'यदि आप सच्चे भारतीय हैं और अपनी भारतीय जननी का मधुर स्तनपान किया है, तो अपने सदन को परदेशी लघु तड़ित गोलक लड़ियों से कदापि न अलंकृत करें।' इसी प्रकार होली में मैसेजी फुहार छोड़ेंगे, 'प्रज्ज्वलित होलिका में अपनेस मस्त दोषों को स्वाहा कर संकल्प लीजिए कि विदेशी रंगीन पिचकारियों और रंगों से हाथ मैले नहीं करेंगे और न करने देंगे।' इस भयंकर मैसेज को पढ़कर कोई भी प्रश्न कर सकता है कि महोदय क्या आपकी सहधर्मिणी आपकी बात स्वीकार करती हैं? तो चुप्पी के सिवा कोई चारा ही नहीं है।

विगत 25 दिसंबर को तो हद ही हो गई जब इनको जीसस का जन्मदिन रास न आया तो उन्होंने तुलसी माई की नकली शादी के दिन वाली अफवाह फैला दी, जबकि उनका विवाह तो कार्तिक मास की पूर्णिमा में हो चुका है। 1 जनवरी को 'हैपी न्यू ईयर' बोलकर थोड़ा सा हैपी होना उनको मंजूर नहीं है। एक नया राग आलापते हुए लिखेंगे 'भारतीय नववर्ष तो चैत्र मास से प्रारंभ होता है। 1 जनवरी को नववर्ष की शुभकामनाएं देना मानसिक दासता का द्योतक है। ऐसे श्यामवर्णी गोरों को भारत की धरा पर निवास करने का कोई अधिकार नहीं है।' इस संदेश को पढ़कर मन तो किया कि प्रत्युत्तर में एक मैसेज मैं भी भेज दूं कि महोदय इस देशीपन का ढ़ोंग रचना बंद कीजिए। अभी आपसे आपकी जन्मतिथि पूछी जाए तो अंग्रेजी महीनों वाली तारीख ही बताएंगे, तब आपको चैत्रादि मासों की सुधि भी नहीं रहेगी। चलिए इस बात को आप यह कहकर टाल भी सकते हैं कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। क्योंकि मेरे माता पिता ने जो लिखवा दिया उसको बताना मजबूरी है। अच्छा चलिए अब आपने अपनी संतान की जन्मतिथि भारतीय पंचांग के अनुसार लिखवाई है क्या? इसमें तो आपका कोई बहाना काम नहीं करेगा। क्योंकि तब आप इतने प्रबुद्ध हो चुके थे कि ऐसी शर्मिंदगी से अपनी भावी पीढ़ी को बचा सकते थे। तब वे खीसें निपोरकर रहे जाते या तो कहते कि मेरे पास तब उपदेश देने का शऊर नहीं था।

लीजिए इतना सबकुछ बता दिया पर उन महाशय का नाम बताना भूल गया। चलो उनका नाम लेकर प्रसिद्ध करने से अच्छा है उनको एक ऐसा नाम दिया जाए जो उन जैसे सबों को शूट करे। मैं तो उन्हें 'बुखारी लाल' कहता हूं। क्योंकि उनको सीजनली देशीपन का तीव्रतम ताप सर चढ़कर बोलता है और दूसरे दिन फिर फटी इंपोर्टेड जींस, सतरंगी टीशर्ट, स्पोर्ट्स शूज धारणकर हीरो होंडा की बाइक पर सवार होकर निकलते हैं और दूरदर्शन को टीवी, लौहपथगामिनी को ट्रेन कहने से गुरेज नहीं करते हैं। आप लोग भी ऐसे बुखारी लालों से कभी न कभी तो टकराते जरूर होंगे क्योंकि ऐसे विचित्र प्राणी फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ह्वाट्सअप की दुनिया में अक्सर सक्रिय रहते हैं। इन्हें यह भी नहीं मालूम है कि उल्लेखनीय ऐप्लिकेशन विदेशियों द्वारा ईजाद किए गए हैं और जिस मोबाइल फोन से वे अपनी उपदेशी घुट्टी न पीने वालों को औकात और मां के दूध की याद दिलाते हैं, चाहे उसने पिया हो या न पिया हो। क्योंकि आजकल के बच्चे फिगर मेन्टीनेंस के चक्कर में इस सुख से वंचित कर दिए जाते हैं। उनके उस उपदेश यंत्र (मोबाइल फोन) में 'भारत में निर्मित' की जगह 'मेड इन चाइना' लिखा होता है, जिसे वे रंगीन कवरों से ढ़ंकने की नाकाम कोशिश भी करते हैं। कुछ तो कॉपी पेस्टी बुखारी लाल होते हैं, जो दूसरों द्वारा भेजे गए मैसेजों को फॉरवर्ड करके इस सुख का आनंद उठा लेते हैं। शायद इसी को गुड़ खाएं गुलगुलों से वैर कहते हैं।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
असिस्टेंड प्रोफेसर हिंदी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट उत्तरप्रदेश 86041-12963

3 प्रगतिशील चिन्तन की गंगोत्री - गोकुलानन्द

श्री गोकुलानन्द तैलंग साहित्य, संस्कृति, काव्यानुरागी व्यक्तित्व के धनी और हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत एवं पुष्टि सम्प्रदाय के विद्वान के रूप में कांकरोली नगर की विद्यानुरागी परम्परा के रूप में पहचाने जाते रहे हैं। सन् 1035 में वृन्दावन से प्रवासित सागर विश्वविद्यालय से अधिस्नातक उपाधियां प्राप्त कर कांकरोली आकर श्री तैलंग ने तृतीय पीठ परिवार के गोस्वामी बालकों की शिक्षण– आधुनिक और पारम्परिक शिक्षा का दायित्व वहन किया।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी के रूप में भी तैलंग ने अपनी काव्य कृतियों 'राष्ट्र भारती', 'मेरे गीत' के माध्यम से राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया और विभिन्न भाषाओं में प्रेम गीत, रसनिर्झर, गीत गौरी, राधागुणगान, रायसागर, व्योमगीत व भ्रमण गीत ग्रन्थ का प्रणयन किया। 'संगीत अष्टछाप' व अष्टछाप कवियों पर आपके भाव विश्लेषणों को हिन्दी साहित्य की अनमोल कृति के रूप में सराहा गया। कल्याण, संगीत जैसी लब्ध प्रतिष्ठ पत्रिकाओं के यशस्ठी संपादक रहे। पुष्टिमार्ग के आधिकारिक लेखक रहे। ब्रजभाषा एकेडमी जयपुर से ब्रजभाषा सेवाओं के लिएस म्मानितह ुए ।क ंकरोली की साहित्यिक संगोष्ठी के वे सदैव प्रेरक रचनाकार रहे। 1950 से निरन्तर ऐसे वातावरण में जहां बालिका और महिलाओं को शिक्षा के प्रति अनुकूल सोच नहीं था। श्री तैलंग ने अपनी बेटियों व पत्नी को उच्च शिक्षा दिलाई। यही नहीं, महाराज श्री के परिवार की पुत्रियों को भी प्रोत्साहन दे विश्वविद्यालयी शिक्षा की ओर प्रेरित किया। बीसवीं शताब्दी के मध्ययुगीन कांकरोली में श्री गोकुलानन्द तैलंग 'निकुंज' प्रगतिशील सामाजिक सोच के सजग प्रहरी व प्रकाश स्तम्भ के रूप में जाने जाएंगे।

4 आकार लेते कांकरोली के नींव के प्रस्तर थे श्री पुरुषोत्तम (पीडी) शास्त्री

स्वान्त: सुखाय अपनी आन्तरिक प्रतिभाओं द्वारा नगर की कला और सांस्कृतिक निधियों को संवर्द्धित करने वाले श्री पुरुषोत्तम शास्त्री एक और शख्सियत जो गत शताब्दी के मध्याह्न काल में बुन्देलखंड से कांकरोली आकर बसे। श्री द्वारकाधीश मंदिर के तृतीय पीठ के अकादमिक संवर्द्धन के द्वारा यहां के पर्यावरण को नया आकार देते रहे। श्री पुरुषोत्तम शास्त्री भी गोस्वामी परिवार के बालवृंद के कुशल शिक्षक रहे और आधुनिक शिक्षा की दिशा में नई पीढ़ी को तैयार करने में सहायक रहे। वे एक कुशल चित्रकार भी रहे।

बॉम्बे हाइकोर्ट के वकील के रूप में ख्यातनाम पीडी शास्त्री (पोतकूर्चि दामोदर शास्त्री) कांकरोली के बौद्धिक समुदाय के एक माननीय सदस्य थे। दक्षिण भारत की अपनी जीवन संगिनी श्रीमती राजलक्ष्मी के प्रभाव से वे कांकरोली में तब एकमात्र दक्षिण, उत्तर और पश्चिम भारत की जीवनशैली के पर्याय थे। महाराज श्री ब्रजभूषणलालजी के वे अभिन्न थे। कहा जा सकता है कि उस युग में श्री द्वारकाधीश मंदिर के नेतृत्व में इस छोटे से क्षेत्र में रचनात्मकता की दृष्टि से प्रयास कर रही हाई अकादमिक प्रोफाइल टीम के वे सक्रिय सदस्य थे। आम पर्यटक के लिए उनके द्वारा लिखी गई 'कांकरोली दिग्दर्शन' पुस्तिका आज भी विधि विभाग में सुरक्षित है।

प्रस्तुति :
अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार, कांकरोली

जयवर्द्धन पत्रिका सालभर मंगवाएं
मात्र 200 रुपए में
संपर्क 94142-39648

गणतंत्र दिवस की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

प्यार का झरना

मां, ममता की मूरत
या ईश्वर की सूरत
मां, प्यार का झरना
या गरिमा का गहना।।

मां, दूध भीगा आंचल
या बिखरा अश्रुजल
मां, बरगद की छांव
या हंसता–गाता गांव।।

मां, जननी पालक है
गृहयान की चालक है
मां, गुलाब की सौरभ
या जीवन का आरंभ।।

मां, सब रिश्तों की जान
या दुआओं की खान
मां, हरा भरा आगोश
या जिजीविषा का जोश।।

मां, असीम आकाश सी
या रवि के प्रकाश सी
मां, दर्पण सी निर्मल
या ज्योति सी उज्ज्वल।।

मां, पूजा सी पावन
या धरती का सावन
मां! चरणों में वन्दन
अर्पित अक्षत–चंदन।।

प्रकाश तातेड़
ए 102, शुभलाभ अपार्टमेंट
रूपसागर
रोड, उदयपुर
मो. 93515-52651

हमारे अधिकृत विक्रेता :

राजसमंद :
- महालक्ष्मी किराणा स्टोर : 97999-30985
- देवनारायण किराणा स्टोर : 98298-92504
- एचएस ट्रेडर्स : 96948-16513

सनवाड़ :
श्री नागणेचा किराणा स्टोर : 99280-96170

केलवा :
न्यू बॉम्बे ट्रेडिंग : 77720-08888

आमेट :
श्री देवनारायण ट्रेडर्स : 96024-63254

रिछेड़ :
श्रीनाथ किराणा एवं डेयरी : 99839-96443

चारभुजा :
देवराज किराणा स्टोर : 81075-98399

उदयपुर :
विजेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी : 77920-03333

नाथद्वारा :
वंदना ट्रेडिंग कंपनी : 70145-87513

देवगढ़ :
महालक्ष्मी प्रोविजन स्टोर : 96024-50455

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक
कराएं प्रति :
94142-39648

गणतंत्र दिवस की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

भगवानलाल सालवी

भगवानलाल सालवी
अध्यक्ष
आम मेवाड़ सालवी समाज
मुख्यालय मात्रीकुण्डिया (चित्तोड़गढ़) 9829693955
मण्डावर परिवार रेलमगरा जिला-राजसमंद

भरकादेवी फिलिंग स्टेशन, गिलूण्ड

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज
रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

गदेड़ा गलाब जांबू चेप रिया

हुपातर आदमी री जग्या फोरी जाणकारी वाला ने ओहदो मिले तो पछे बंटाढार ईज वेई। कंपीटीसन परीक्सा म्हे सौ म्हु जणीरे पचासी लंबर अवे वणी रो नामो इंतजार री लिस्ट म्हे अर चालीस बीयालिस लंबर वाळो मेरिट लिस्ट म्हे जठे अई न नौकरी म्हे लागे वठे कामकाज कणी तरीका ऊं वैतो वेठ जाणी सकां।

काम निकालवा रे वास्ते चमचागिरी अर मसका पालिस लगावा म्हे स्याणा मनख तो आपणो ठावो ठिकाणो ठाबंद कर रिया है। स्वाभिमानी अर हुंश्यार गोता ईज खई रिया है। जणा ने भूख न्ही लागे खादो-पीदो अंगे न्ही लागे। गैस वेई जे, खादो पचे कोइनी वणारे काजू, वदाम, पीस्ता, मिठाया, घी रो चकमाल चोईस घड़ी त्यार मले।

हानो भाजी तो छेटी री वात, दो टेम री रोटी रा कटका बटका वास्ते जोरां री भूख लागवा वाला ने लालंगण्या लेणी पड़े। पया वाला नपराट मनखा रे पैरवा ओढवा रा अणगणती रा अणथाक गाबा। पगा म्हे पैरवा रा पांच-पन्दरे जरबा री जोड़िया न्यारी। डीया परे लगावा रा भांत भांत रा चश्मा अर इतर फुलेल रो कई कैवणो। वरस में दो चार टेम अेक डरेस रे पैरवा रो लंबर अई जवे तो मोटी वात।

दूजी आड़ी गरीब-गरबा मनखा रे डील पै ढांकवा रा गाबा ई पूरा न्ही। वेंत भर धोवत्यो अर एक बंडी वा बी ठेगला लागी थकी ढाब्यो ढाब राखवा ने।

जीवा रो अधिकार हगला ने है। रोटी-बाटी, वस्त्र वागा न रहेवा रो मकान जश्यी जरूरत री चीजां हगला ने मिलणी चावै। कैवा ने तो विग्यान रा युग म्हे जीवी रिया अर मोकली तरक्की कर रिया हा पण हांची वात या है क अबोरु तलक मनख दो तरेऊं वदारे मर रिया है। अेक तो अणभावतो खई न दूजा भूख ऊं। मझ हियाला म्हे कतरा मनखा ने फुटपाथ परे मजबूरीऊं हुवणो पड़े या वात कणीऊं अछानी न्ही है।

खीसा म्हे पया वदे पछे मनख वतो उघड़ी जवे। लखपति करोड़पति वणवा री न करोड़पति अरबपति वणवा री भगवान ऊं अरज करतो रे। पईसो म्हारो परमेसर अर म्हु पईसा रो दास जो व्हे वणी म्हे मनखाचारो व्हे तो व्हे। संसार म्हे योईज वैतो अई रियो है घोड़ा ने घास मले तो मले, पण गदेड़ा गलाब जांबू चेपवा म्हे कसर न्ही राख रिया है।

नगेन्द्र कुमार मेहता
शिक्षाविद् व साहित्यकार
तेलियो का तालाब, नाथद्वारा 9829960055

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी
होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।
दिलीप जैन
मो. 9214384205 9602997715
जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

गोप कुमार पिल्ले
गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
An ISO 9001-2008 certified school
HARITHA INTERNATIONAL
SR. SEC. SCHOOL
An English Medium
Day Boarding
School-Nursery to 12th
Science (Maths, Bio.) Commerce
Haritha Nagar Shanker Pura Dt. Rajsamand
Ph. 02952-290047, 7340568773 E-mail haritaintlschool@gmail.com

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

परिणाम ही पहचान है

S.D. Memorial School & Hostel

Regd. : 31/Ajm/2009

Railmangra, Rajsamand

प्रवेश प्राम्भ प्ले ग्रुप से कक्षा 8वीं तक

AN ENGLISH MEDIUM

CO-EDUCATIONAL DAY BOARDING SCHOOL

ओमप्रकाश शर्मा

न होमवर्क न बस्ते का भारी बोझ न घर पर अतिरिक्त अध्ययन न ट्यूशन

विशेष :- वे अभिभावक विशेष रूप से सम्पर्क करें जिनके बच्चों की सोहबत ठीक नहीं है, जिद्दी है, शरारती है, तथा मानसिक रूप से तो स्वस्थ है परन्तु बार-बार विद्यालय बदलने पर भी जिनकी शैक्षिक प्रगति नहीं हो पा रही है।

-: विद्यालय की विशेषताएं :-

▸▸ पूर्णतया अंग्रेजी माध्यम का डे एण्ड बोर्डिंग विद्यालय। ▸▸ कमजोर बच्चों के अध्ययन पर विशेष जोर। ▸▸ कम्प्यूटर शिक्षण नर्सरी कक्षा से। ▸▸ कम्प्यूटराइज्ड मूल्यांकन पत्र द्वारा प्रतिदिन अध्यापन की जांच। ▸▸ नर्सरी कक्षा से ही अंग्रेजी वार्तालाप पर विशेष जोर। ▸▸ अध्ययन व नैतिक व्यवहार की सम्पूर्ण जिम्मेदारी विद्यालय की। ▸▸ प्रतिदिन हॉबी कक्षाएं जैसे डांस, गायन, लेखन, सामान्य ज्ञान आदि। ▸▸ शांत व भीड़-भाड़ से दूर, सुसज्जित व आधुनिक सुविधाओं से युक्त विद्यालय भवन। ▸▸ आधुनिक सुविधाओं से युक्त न्यूनतम फीस में कक्षा 10वीं तक हॉस्टल सुविधा। ▸▸ प्ले ग्रुप से यूकेजी तक वाहन सुविधा।

आरटीई के तहत नर्सरी कक्षा में 25 प्रतिशत निःशुल्क प्रवेश

R.S.E.B. शिव मंदिर के पीछे, दरीबा रोड, रेलमगरा (राजसमन्द) 9667635724, 9772879232

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To